श्रीः

श्री वरकलवंशचरितम्

महामहिम-आचार्य-श्रीमदमृतवाग्भव-प्रणीतम्।

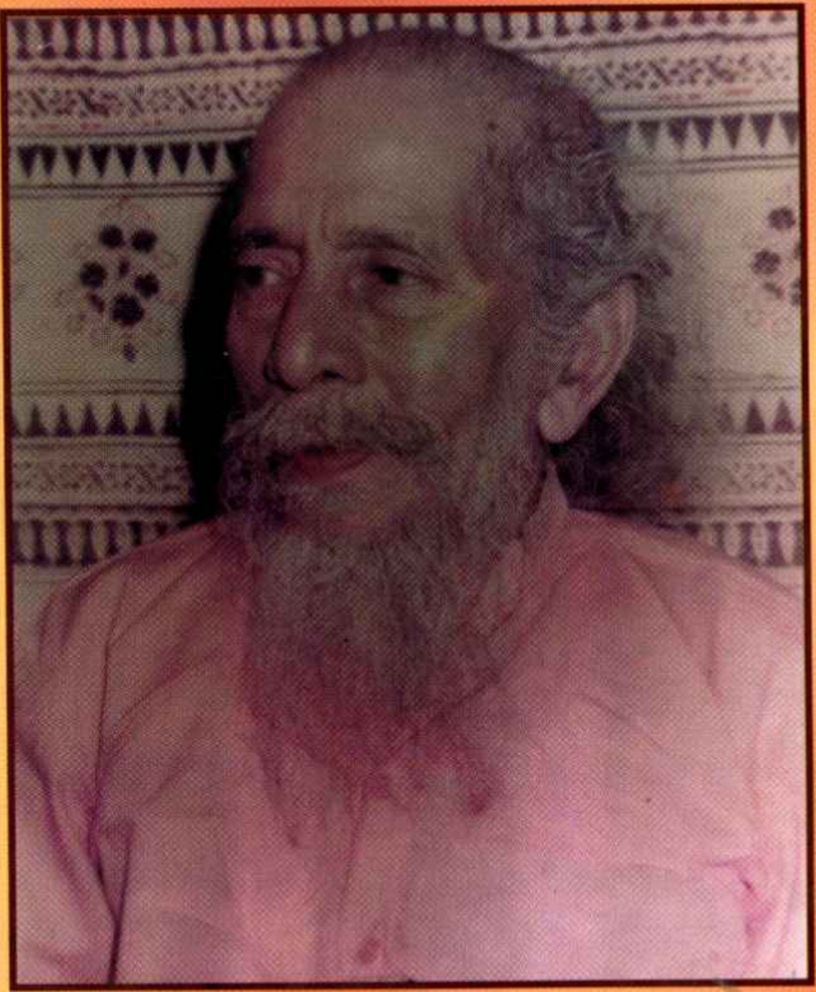

सम्पादकः

डा० बलजिन्नाथ पण्डितः।

प्रकाशकः

श्रीपीठम्-सैद्धदर्शनशोध संस्थानम्।

जम्मू

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

श्रीः

श्री वरकलवंशचरितम्

महामहिम-आचार्य-श्रीमदमृतवाग्भव-प्रणीतम्।

सम्पादकः

डा. बलजिन्नाथ पण्डितः।

प्रकाशकः

श्रीपीठम्-सैद्धदर्शनशोध संस्थानम्।

जम्मू

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

प्रथमं संस्करणम् - वि० सं० 2062

श्री गुरु महाराज की अपार कृपा से
इस ग्रन्थ रत्न के प्रकाशन का व्यय
श्री सेवाराम शर्मा
ने वहन किया

मुद्रकः
श्री कृष्ण प्रिन्टर्स, 7207, कुतुब रोड, नई दिल्ली-110055
फोन : 23543144

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

प्रास्ताविकम्

'श्री वरकलवंश चरितम्' तथा कोई अन्य हस्तलिखित ग्रन्थ पूज्यपाद श्री आचार्य महोदय के थैले में ही रहा करते थे। वे जहाँ कहीं भी जाया करते थे, उस थैले को उठाकर साथ ले जाते थे। इन ग्रन्थों में से दो ग्रन्थ वे थे जो मूलरूप में प्रकाशित हो चुके थे। एक था ''श्री आत्मविलास:'' जो हिन्दी व्याख्या सहित प्रकाशित हो चुका था और दूसरा था ''श्री सिद्ध महारहस्यम्'' जो केवल मूलरूप में ही प्रकाशित हुआ था। श्री पूज्यपाद जी के ही आदेश से मैंने उन दोनों ग्रन्थों की संस्कृत व्याख्याएँ लिखीं। उन व्याख्याओं को मैंने अक्षरश: श्री पूज्यपाद जी को सुना दिया और स्थान–स्थान पर उनके आदेशों के अनुसार अपनी व्याख्या में संशोधन, परिवर्धन, स्पष्टीकरण आदि संस्कार करके रखे थे। कई एक वर्षों तक उनका प्रकाशन नहीं किया जा सका। अन्ततोगत्वा श्री पूज्यपाद जी ने अपने शिवलोक–गमन से कुछ ही महीने पूर्व दोनों ही व्याख्याग्रन्थ मुझे सौंप दिए और यह आदेश दिया कि समुचित प्रबन्ध बन सकने पर इन दोनों का प्रकाशन बारी–बारी किया जाना चाहिए।

पूज्यपाद श्री आचार्य महोदय ने अपने हाथ से एक प्रबन्ध काव्य की रचना की थी। उस काव्य में उन्होंने अपने पूर्वजों और निकट सम्बन्धियों का इतिहास काव्यशैली में लिख रखा था। उस काव्य ग्रन्थ में सौ दो सौ वर्षों में प्रकट हुए कई अद्वितीय विद्वानों के इतिहास का वर्णन किया गया है। पूज्यपाद को हाथ की नाड़ियों में कोई ऐसा विकार हो गया था कि लिखते समय अंगुलियों में थरथराहट आ जाती थी और अक्षरों के लिखने में अस्पष्टता आती थी। उससे उनके हस्तलेख को स्पष्टतया पढ़ा नहीं जा सकता था। उस प्रबन्धकाव्य का नाम उन्होंने ''वरकलवंश चरितम्'' रखा था। श्री पूज्यपाद जी के वंश का लोक प्रसिद्ध नाम ''वड़कले'' था। इस वंश के अनेकों महाराष्ट्री विद्वान शताब्दियों पूर्व वाराणसी में आकर बसे थे। कुछ एक वंशज प्रयाग में ही रह रहे थे। उस वंश में अनेकों शास्त्रमर्मज्ञ और कई एक आत्मसाक्षात्कारी विद्वान शताब्दियों से प्रकट होते आए। उन सभी महापुरुषों का यथोपलब्ध इतिहास उस प्रबन्ध काव्य में लिखा गया है।

श्री पूज्यपाद जी के शिवलोकप्रस्थान से कुछ ही सप्ताह पूर्व मैं दिल्ली गया था और वहाँ उनके साथ दिनभर बैठा रहा। उस समय उन्होंने एक तो ऊपर निर्दिष्ट ''श्री आत्मविलास–विमर्शिनी'' और ''श्री सिद्ध महारहस्य विमर्शिनी'' नाम के दोनों ही व्याख्या ग्रन्थों की पाण्डुलिपियाँ मुझे दे दीं और यह आदेश दिया कि यथासम्भव तथा यथासमय इनके प्रकाशन के लिए यत्न करना चाहिए। मैंने इस आदेश को स्वीकार किया और आगे 'श्री आत्म विलासविमर्शिनी' को प्रकाशित भी किया।

उसी अवसर पर पूज्यपाद जी ने ''श्री वरकलवंशचरितम्'' की पाण्डुलिपि मुझे दिखा दी और मेरे सामने यह प्रस्ताव रखा कि मैं कुछ समय दिल्ली में ही रूक जाऊँ और

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

इस प्रबन्ध काव्य को स्पष्ट अक्षरों में लिखकर रख दूँ तथा उनके द्वारा किए जाते हुए स्पष्टीकरणों के अनुसार इस प्रबन्ध काव्य की एक सुन्दर और सुपाठ्य पाण्डुलिपि तैयार कर दूँ। उस समय मुझे जल्दी ही जम्मू लौट आना था अत: मैंने यह प्रस्ताव उनके सामने रखा कि मैं दो–तीन सप्ताह के अनन्तर जम्मू से छुट्टी लेकर दिल्ली आऊँगा और इस कार्य को पूरा कर दूँगा। मुझे क्या विदित था कि श्री पूज्यपादजी के शिवलोक गमन का समय अति निकट आ गया है! यदि उस प्रबन्ध काव्य की उस पाण्डुलिपि के अक्षर सुस्पष्ट होते तो श्री आचार्य महोदय उसे उसी समय मुझे सौंप देते परन्तु वे चाहते थे कि उनके सामने ही उस काव्य की नई पाण्डुलिपि उनके द्वारा किए जाते हुए स्पष्टीकरण के साथ सुस्पष्ट अक्षरों में लिखी जाए। परन्तु वैसा सम्भव नहीं होने पाया, क्योंकि कुछ ही सप्ताहों के बीत जाने पर उन्होंने अपने मानवशरीर को छोड़कर सिद्धलोक की ओर गमन किया।

उनके शिवलोक के प्रति प्रस्थान के अनन्तर एक–एक करके उनके कई एक ग्रन्थों का प्रकाशन जम्मू में होता रहा। श्री 'आत्मविलास' पर मेरे द्वारा लिखी गई और उनके द्वारा स्वीकृत टीका ''आत्मविलास विमर्शिनी'' भी कुछ एक वर्षों में प्रकाशित हो गई ''श्री वरकलवंशचरितम्'' नाम का उपरोक्त प्रबन्ध काव्य अभी तक प्रकाशित नहीं किया जा सका। इस वर्ष मैंने काफी परिश्रम और सुपर्याप्त सोचविचार के द्वारा उस प्रबन्धकाव्य की प्रेस कापी को तैयार कर ही दिया। श्री पूज्यपाद जी की ही कृपा से मैं उन अस्पष्ट अक्षरों में लिखे हुए उस ग्रन्थ को पर्याप्त मात्रा में सुनिश्चित रूप में पढ़ने और उसकी प्रतिलिपि को लिख डालने में समर्थ हो गया। तदनुसार उस ग्रन्थ की प्रेस कापी को मैंने तैयार किया । कई एक विरले स्थानों पर ही अक्षरों के विषय में संशय बना रहा । अधिकांश में सारे का सारा प्रबन्धकाव्य भली–भाँति पढ़ा जा सका और उसकी प्रेस कापी तैयार की जा सकी।

श्री पूज्यपाद जी चाहते थे कि इस काव्यग्रन्थ को भली–भाँति प्रकाशित किया जाए और इसके द्वारा अनेकों सिद्धजनों और शास्त्रपारदर्शी विद्वान महानुभावों के सच्चे इतिहास पर पर्याप्त प्रकाश डाला जाए। उन्हीं की इच्छा के फलस्वरूप मैं इसकी पाण्डुलिपि को लगभग पूरी तरह से यथार्थ रूप में पढ़ सका और इसकी शुद्ध प्रेस कापी को तैयार कर सका। फिर उन्ही की इच्छा के फलस्वरूप इसका मुद्रण और प्रकाशन होने वाला है। इस काव्यग्रन्थ को लिखकर श्री पूज्यपाद जी ने अपने पूर्वजों का ऋण भली भाँति चुका दिया। मैं तो इस ग्रन्थ का सम्पादन करते हुए उनके ऋण के एक लेश मात्र भाग को चुकाने के प्रयत्न में लग गया। यह भी उन्हीं की कृपा दृष्टि का फल है। उन्हीं की इच्छा के फलस्वरूप दिल्ली में इस ग्रन्थ के मुद्रण का प्रबन्ध होने वाला है। वहाँ श्री पूज्यपाद जी के कुछ एक प्रमुख कृपापात्र शिष्यजन इस ग्रन्थ के मुद्रण और प्रकाशन का भार अपने ऊपर लेते हुए और श्री पूज्यपाद जी के

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

प्रति अपनी श्रद्धा के पुष्प इस तरह से चढ़ाते हुए अपने अपने जीवन को धन्य बनाने के लिए उत्सुक हैं।

मूलग्रन्थ संस्कृत भाषा में लिखा गया है। इसके सर्वथा शुद्ध मुद्रण के लिए संस्कृतभाषा के मर्मज्ञ विद्वान डा० पुष्पेन्द्र कुमार जी ने इस ग्रन्थरत्न के मुद्रण की प्रक्रिया में समुचित योगदान दिया, जिसके लिए हम उनका आभार प्रकट करते हैं। आजकल श्री पूज्यपादजी के भक्तों में श्री राजकुमार जी अग्रवाल, श्री वैष्णवदास जी बक्शी, श्री सेवाराम जी शर्मा, श्री रवि शर्मा त्रिवेदी, श्री के. के. आनन्द, श्री ओ. एन. महेन्द्रू व श्री कस्तूरी लाल प्रमुख हैं। ये उपरोक्त सभी महानुभाव इस गुरूसेवा को करते हुए बहुधा धन्य हैं। हम दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के प्रोफेसर डा० रघुनाथ शर्मा जी के आभारी हैं जो पूज्यपादजी के कृपा पात्र हैं तथा दिल्ली के संस्कृत भाषा के विद्वानों में उनका विशिष्ट स्थान है। अन्त में मैं अपनी पुत्री और दामाद श्रीमती डा० गिरिजा शर्मा एवं श्री डा० बृजनन्दन शर्मा को भी इस महान कार्य के लिए आशीर्वाद देता हूँ, जिनके अहर्निश सतत अथक प्रयासों से ही यह रचना इस रूप में प्रस्तुत हो सकी।

जम्मू
ता: ७/२/१९९८

डा० बलजिन्नाथ पण्डित:
सम्पादक:

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

रचनाकार

श्री अमृतवाग्भवाचार्य जी

सच्चिदानंद ब्रह्म को वेदों में रसमय कहा है — रसो वै सः। और सच तो यह है कि भगवान को तभी मज़ा आता है जब वे शरीर धारण करके अपने भक्तों के साथ नाना प्रकार के खेल खेलते हैं।

श्री अमृतवाग्भवाचार्य जी महाराज ऐसे ही भक्तों में अग्रगण्य हैं जिनका पूरा जीवन ही इस प्रकार की लीलाओं से भरा हुआ है। पूज्य गुरु महाराज को मात्र सोलह वर्ष की आयु में लगातार नित्य चालीस दिन तक 'शक्ति महिम्न स्तोत्र' का पाठ करने पर भगवान शंकर के अवतार भगवान दुर्वासा जी ने साक्षात् दर्शन दिए और उन्हें शांभवी योग की साधना के लिए दीक्षा दी, फिर तो गुरु महाराज के जीवन में इस प्रकार की अनेक घटनाएँ घटित होती ही रहीं। उनमें से प्रमुख हैं—

पूजनीय महाराज जी ने जब श्रीनगर (कश्मीर) की भगवती शारिका देवी के मंदिर में पंचस्तवी का पाठ अत्यंत मधुर स्वर में किया तो उनके इष्ट देव भगवान शंकर अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्होंने अचकन पहनकर, एक कश्मीरी पंडित के रूप में दर्शन दिए तथा अपना नाम शिवजी पंडित बताया। लगभग एक सप्ताह तक भक्त और भगवान की यह लीला चलती रही और अंत में भगवान शंकर गुरुजी की कुंडलिनी जागृत करके अचानक ही अंतर्ध्यान हो गए। गुरुजी ने इस घटना को लगभग अस्सी श्लोकों में विस्तार के साथ लिखा है, जिसे दिल्ली की लाल बहादुर संस्कृत विद्यापीठ ने अपनी 'शोधप्रभा' में प्रकाशित किया है। इसी प्रकार काशी में सुनसान पड़े भगवती तारा देवी के मंदिर में जब गुरु महाराज नरबलि की घटना को स्मरण करके घबरा गए तो स्वयं भगवती एक बंग महिला के रूप में प्रकट हो गईं और गुरु महाराज को गायत्री मंत्र के जप की महिमा समझा गईं। भक्तों को कष्टों से बचाने के लिए गुरुजी ने 'प्रभो शंभो' जैसी प्रार्थना लिखी। इस श्लोक में गुरुजी को 'बद्धादरकरं' शब्द उचित नहीं लगा, उसी समय भगवान शंकर एक महर्षि के रूप में वहाँ प्रकट हुए और उन्हें ऐसा करने से रोक दिया क्योंकि गुरुजी ने यह बिलकुल उपयुक्त शब्द लिखा था।

काशी के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त महान् विद्वान् महामहोपाध्याय पद्मविभूषण श्री कविराज गोपीनाथ जी ने गुरुजी से आग्रह करके उनके जीवन की ऐसी कुछ घटनाओं को 'सिद्ध महारहस्यम्' में लिखवा लिया था जो अब हिंदी अनुवाद सहित प्रकाशित हो चुका है। अमरनाथ गुफा में गुरु महाराज को भगवान शंकर ने

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

अर्धनारीश्वर के रूप में साक्षात् दर्शन दिए थे। पूज्य महाराज जी की इन लीलाओं का वर्णन करने लगें तो एक पूरी पुस्तक ही बन जाएगी। हम उन्हें अन्यत्र एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने का प्रयत्न भी कर रहे हैं। हम यहाँ गुरु महाराज के जीवन की एक महत्वपूर्ण अंतिम घटना का वर्णन कर इसे समाप्त कर रहे हैं। उस समय गुरु महाराज, साउथ मोतीबाग, दिल्ली में, रक्षा मंत्रालय में उच्च पद पर कार्यरत श्रीराम के परम भावुक भक्त तथा महान् तपस्वी श्री पंडित देशराज जी शर्मा के सरकारी आवास 'सी–२२' में रहते थे। गुरु महाराज ने भगवती से प्रार्थना की ''माँ! आपने मुझे अपने अनेक रूपों में साक्षात् प्रकट होकर दर्शन दिए हैं किन्तु आपने अभी तक हमें अपने वास्तविक स्वरूप का दर्शन नहीं दिया।'' गुरु महाराज उस समय अपने बिस्तर पर लेटे हुए थे तभी भगवती त्रिपुर सुंदरी दो वर्ष की बालिका बन कर उनकी गोद में आ बैठी। देवी के दोनों पैरों में पाजेब थी। गुरुजी ने देखा कि एक पैर से पाजेब निकलकर गिर गई है। गुरु महाराज ने जैसे ही वह पाजेब माँ के श्रीचरणों में पहनाई, वह तत्काल अंतर्ध्यान हो गईं।

शरीर त्यागने से पूर्व श्री बी.डी. बक्शी जी ने जब उन्हें प्रणाम किया तो गुरुजी के मुख से निकला– ''जय शंकर''। गुरुजी इन शब्दों से सबको आशीर्वाद देते थे, और उनके मुख से निकले ''जय शंकर'' ही उनके अन्तिम शब्द थे। गुरुजी की इच्छानुसार उनके मृत शरीर को हरद्वार में नीलधारा में एक कुर्सी पर बिठाकर गंगा जी के जल में समर्पित कर आये। गुरुजी की कुर्सी के चारों ओर लगभग बीस किलो के पत्थर बाँध दिये थे ताकि उनका दिव्य शरीर बह कर इधर–उधर न चला जाए। और समाधि के रूप में वहीं रहें, किन्तु आश्चर्य! गंगा मैया तो जैसे अपने पुत्र की प्रतीक्षा ही कर रहीं थी, बीस मिनट के बाद जब हम गुरु महाराज को अन्तिम प्रणाम करने लगे तो डा. रघुनाथ जी शर्मा के अनथक प्रयास करने पर न तो वहाँ गुरुजी का शरीर था और न कुर्सी, जबकि नवम्बर मास में गंगाजी का जल इतना पारदर्शी था कि सब कुछ नज़र आता था।

श्री अमृतवाग्भवाचार्य जी अपने छात्र जीवन में श्री वैद्यनाथ वरकले के नाम से प्रख्यात थे। इनके पिता श्री कृष्ण जी शास्त्री और माता श्रीमती राधा देवी थी। तीन मास की आयु में इन्हें जिस मातृ–स्नेह से वंचित होना पड़ा वह इन्हें विमाता रुक्मणि देवी से भी न मिला। पिता की आज्ञा से आपने शीलवती देवी से विवाह तो कर लिया किंतु शीघ्र ही सदा के लिए पत्नी का त्याग कर ईश्वर भक्ति में लग गए। हाँ, पत्नी के निरंतर अनुरोध पर मात्र एक बार, साधना का मार्ग समझाने के लिए वृंदावन में भेंट की थी और इस प्रकार उन्हें भी साधना मार्ग में उच्च स्थान तक पहुँचा दिया।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

पूजनीय गुरु महाराज का व्यक्तित्व सर्वतोमुखी प्रतिभा संपन्न था उन्हें अपने पिछले चार जन्मों का ज्ञान था। व्याकरण, ज्योतिष और तंत्र–मंत्र का उन्हें अद्‌भुत ज्ञान था। वे सर्वतंत्र स्वतंत्र थे जिसका अर्थ है कि वेद, उपनिषद्, पुराण, षड्दर्शन आदि सभी विषयों का उन्हें ज्ञान था, किसी भी विषय की जिज्ञासा को शास्त्र सम्मत ढंग से हल कर देते थे। इधर वे संस्कृत के आशुकवि थे और किसी भी विषय पर संस्कृत में तत्काल ही श्लोक रचना कर देते थे। उनकी संस्कृत रचनाएँ इसका ज्वलंत प्रमाण है। ''आत्म विलास'' उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना है। वे स्वतंत्रता संग्राम के अमर शहीदों के सान्निध्य में रहे थे और श्री चंद्रशेखर आज़ाद और श्री राजगुरू के साथ बिताए दिनों के संस्मरण सुनाते थे। छात्र जीवन में वे एक कुशल तैराक और क्रिकेट–कप्तान भी रहे। अध्ययन में उन्होंने अनेक स्वर्ण पदक जीते थे। वाराणसी में अनेक शोधकर्ताओं का आपने मार्ग निर्देशन किया था। इसके अतिरिक्त वे एक महान योगी भी थे, उन्हें खेचरी के अतिरिक्त योग के अनेक दुर्लभ रहस्यों का ज्ञान था। वे प्रात: तीन बजे उठकर साधना करते थे।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

सिद्धमहामन्त्रप्राप्तीतिहासः

— श्री अमृतवाग्भवाचार्य जी

मन्निर्मितः प्रभोशम्भोश्लोको यत्सदयेच्छया।
इष्टसिद्ध्यर्थ प्राप सिद्धमहामन्त्रस्वरूपताम्।। १।।

हितायाऽऽस्तिकलोकानां वर्णयामि समासतः।
नत्वा तत्पादयुगलं तद्वृत्तं विस्मयावहम्।। २।।

सायन्तनं नित्यकृत्यं समाप्य समवस्थिते।
स्वासने मरूयन्धकारावृते पूजागृहेऽमले।। ३।।

श्रीशिवप्रार्थनापद्ये प्रातरेव स्वनिर्मिते।
अपशब्दं चिन्तयति सहसा दिव्यदेहवान्।। ४।।

जीर्णशुकं जानुदघ्नं वसानो लम्बमेकतः।
रोमगुच्छाचितबिलमहाश्रोत्रः शशिप्रभः।। ५।।

बर्बरप्रभरोमालिव्याप्तसर्वाङ्गविग्रहः।
तिरस्कृततडिच्चञ्चत्कनीनिकविलोचनः।। ६।।

महात्मा प्रकटीभूय कोऽपि मत्सम्मुखं तदा।
उच्चालयन् तर्जनीं स्वां मामुवाच सगर्जनम्।। ७।।

पद्यमेतन्नास्त्यशुद्धं न कार्यं परिवर्तनम्।
एवं समासे सुमते ! कामशुद्धिं विशङ्कसे।। ८।।

इत्युक्त्वा यो दयार्द्रेण चक्षुषा वीक्ष्य मां पुनः।
शम्पेव क्वाप्यगात् सद्य आश्रित्याऽलक्षितां गतिम्।। ९।।

अजानन्नपि तस्याऽहं नामधामादिकं मुहुः।
प्रणमामि सदा भक्तया रूपं वाक्यं च संस्मरन्।। १०।।

नालागढ़े धर्मसभाभवने मासि मांधवे।
वृत्तं वृत्तं वैक्रमेऽब्दे ऋद्धिधैर्यमिते गते।। ११।।

— आचार्य अमृतवाग्भवः

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

★ श्रीः ★

मन्त्र के इतिहास का भाषानुवाद

— श्री अमृतवाग्भवाचार्य जी

मेरा बनाया 'प्रभो! शम्भो!' श्लोक जिसकी दयामय इच्छा से स्वेष्ट–सिद्धि के लिए सिद्धमहामन्त्रस्वरूप हो गया, उसका आश्चर्यजनक वृतान्त उनके चरणों को प्रणाम करके आस्तिक लोगों के हित के लिये संक्षेप से यहाँ मैं वर्णित कर रहा हूँ ॥१–२॥

सायंकाल का नित्य–कृत्य समाप्त कर अपने निर्मल पूजागृह में जहाँ अन्धकार भरा हुआ था मैं अपने आसन पर बैठा हुआ था। उसी दिन प्रातःकाल ही अपने बनाये श्री शिव की प्रार्थना–श्लोक ('प्रभो! शम्भो') में अशुद्धि को सोच रहा था, इतने में ही अकस्मात् एक दिव्य शरीरधारी घुटनों तक पुराना कपड़ा जिसका एक छोर नीचे लटक रहा था, पहने हुए, रोओं के गुच्छों से भरे हुये छिद्र वाले जिनके बड़े कान थे ऐसे पुरुष प्रकट हुए। उनका वर्ण पूर्ण चन्द्रमा की तरह चमकीला था। उनके सम्पूर्ण शरीर में घुंघराले बाल भरे थे और आँखों की पुतलियाँ बिजली की चमक से भी अधिक चमकीली थीं। ऐसे वे अज्ञात कोई महापुरुष मेरे सम्मुख प्रकट होकर अपनी तर्जनी उंगली को ऊँची उठाकर घुमाते हुए और बड़ी गर्जना के साथ मुझसे कहने लगे॥ ३–७॥

यह श्लोक अशुद्ध नहीं है, उसमें कोई इधर–उधर परिवर्तन नहीं करना तुम तो बुद्धिमान् हो ऐसा समास करने पर ''बद्धादरकरं'' में कौनसी अशुद्धि की तुमको शंका हो रही है। इस तरह कहकर दया–दृष्टि से एक बार मुझे फिर देखा और बिजली की तरह अदृश्य गति से वे कहीं चले गए, अदृश्य हो गए॥८–९॥

उनका नाम और उनका स्थान कुछ भी मैं नहीं जानता, फिर भी बारम्बार श्रद्धा से उनके आदेश को और उनके स्वरूप को स्मरण करता हुआ उनको प्रणाम करता रहता हूँ। यह घटना संवत् १९९० वैशाख मास की है और मैं उस समय नालागढ़ (हिमाचल प्रदेश) धर्मसभा भवन में था॥ १०–११॥

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

श्री सिद्धमहामन्त्र

प्रभो! शम्भो! दीनं

विहितशरणं त्वच्चरणयोर्

भवारण्यादस्माद्विषम–

विषयाशीविषवृतात्।

समुद्धृत्य श्रद्धा–

विधुरमपि बद्धादरकरं

दयादृष्ट्या पश्यन्निज–

तनयमात्मीकुरु शिव!

— श्री अमृतवाग्भवाचार्य जी

"प्रभो शंभो" मंत्र का हिन्दी अर्थ

– हे सर्वशक्तिमान्! समस्त संसार का कल्याण करने वाले कल्याणरूप शिव भगवान्! आप के चरणों में दीन भाव से शरण आए हुए मुझ को विषयरूपी भयङ्कर विषधर सर्पों से भरे हुए इस संसार रूपी जंगल से बाहर निकाल कर अपनी दयादृष्टि से देखते हुए अपने पुत्र को अपना आत्मीय बना लो। यद्यपि श्रद्धा आदि का मुझे ज्ञान नहीं है, तथापि चारों ओर से भयभीत होकर हाथ जोड़े हुए शरण में आया हूं। अत: अपने इस दीन पुत्र को हे शिव! अपने आप स्वीकार करो।

शान्ति: शान्ति: शान्ति:

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

श्रीः

श्री वरकलवंशचरितम्

प्रथमः सर्गः।।

शबर शिवमहेलां रेणुकारूपमाप्त्वा, भृगुशिवजमदग्नेर्दारभावं प्रपन्नाम्।
सपरशुकर–रामस्यात्मनो जन्मदात्रीं, वरकलकुलदेवीमेकवीरामुपासे।।०।।
ऐन्दवीं कलिकां शीर्षे शौक्लीं भूतिंच वर्ष्मिणि। चान्द्रीं सौरीं तथाग्नेयी दृष्टिं बिभ्रच्छिवोऽवतात्।।१।।
कुलदेवीमेकवीरां कौण्डिन्यं गोत्रकारिणम्। त्रिपुरां बालिकां देवीं स्वेष्टां नौमि पुनः पुनः।।२।।
अथ वक्ष्ये वंशवृत्तं स्ववंश्यानुग्रहेच्छया। नात्राभिमानलेशोऽस्ति न च स्वं गौरवं तथा।।३।।
अस्ति भागीरथीतीरे त्रिषुलोकेषु विश्रुता। पुरी वाराणसी नाम विश्वनाथविलासभूः।।४।।
असी दक्षिणतो यस्या वरणा चोत्तरेण तु। सङ्गता गङ्गया यस्मात् ततो वाराणसी स्मृता।।५।।
आत्मज्ञानं काशतेऽस्यामतः काशीति कीर्तिता। न विमुक्तं भगवताऽ तोऽविमुक्तं प्रकीर्त्यते।।६।।
अवयोऽपि विराजन्ते मुक्ता यस्याः प्रभावतः। अविमुक्तं ततो नाम वाराणस्या विराजते।।७।।
यदस्ति भारते वर्षे विद्यानां पीठमुत्तमम्। अधिष्ठात्री विशालाक्षी श्रीशक्तिर्यत्र राजते।।८।।
गम्भीरेण विशालेन रूपेण सुमनोरमा। तटलग्ना प्रवहति यत्र भागीरथी सदा।।९।।
न बाधन्ते वारिचरा मज्जतः प्लवतोऽपिवा। वारि यत्रैव गङ्गाया लोकान् कानपि जात्वपि।।१०।।
यत्र गव्यूतिपर्यन्तं दृढप्रस्तरनिर्मिताः। सोपानाल्यो विराजन्ते घट्टेषु सुमनोरमाः।।११।।
कौशेय–शाट्यो यत्रत्या विश्वविख्यातरम्यताः। भूषयन्ति जगन्नारीः सा काशी केन वर्ण्यताम्।।१२।।
सङ्गीते रूपलावण्ये जेतुं स्वर्गाङ्गना अपि। वाराणस्याः शक्नुवन्ति केवलं वारयोषितः।।१३।।
सङ्गीतज्ञाः शिल्पविज्ञा मल्लविद्या–धुरन्धराः। मुदा यत्र विराजन्ते गुणिनामुत्तमोत्तमाः।।१४।।
समस्त–विध–पण्याढ्या अनेका पण्यवीथीकाः। सततं यत्र काशन्ते साकाशी काशतेतराम्।।१५।।
समस्त–विध–विद्यानां कलानां मातृमन्दिरम्। काशी वाराणसी नित्यं कैवल्येन प्रकाशते।।१६।।
समग्रापि सुखेनैव लब्धुं शक्या यथारूचि। सामग्री यत्र महती सततं भोगमोक्षयोः।।१७।।
यत्र प्रतिदिनं कोऽपि भवत्येव समुत्सवः। मेलनं यत्र लोकानां जायते सुमनोरमम्।।१८।।
विद्यार्थिनः सदा काशीं सर्वदेशनिवासिनः। भजन्ते सर्वदात्रीं तां कामधेनुमिवामराः।।१९।।
महोक्षा भिक्षवश्चैव सोपानाल्याः सहस्रशः। विधवा अपि यत्रैव तिष्ठन्ति विगतज्वराः।।२०।।
परःसहस्राः प्रासादाः पताकाभिरलङ्कृताः। आकाशचुम्बिनो यत्र विलसन्ति निरन्तराः।।२१।।
स्वस्व वर्णाश्रमाचारनिष्ठाऽनुष्ठानतत्पराः। ब्रह्म–क्षत्रिय–विट्–शूद्राः दृष्यन्तेऽद्यापि यत्र वै।।२२।।
विद्यालयैर्मठैदेवमन्दिरैः पुस्तकालयैः। विराजते धर्मसभाभवनैश्च सुशोभिता।।२३।।
वरःसहस्रा विद्वांसो ग्रन्थनिर्माण–पण्डिताः। वसन्त्यद्यापि यत्रैव सा काशी राजतेतराम्।।२४।।
नानाशास्त्र प्रणेतृणां विदुषां कर्मकाण्डिनाम्। ज्ञानिनां योगिनां चैव जन्मभूमिर्विराजते।।२५।।
भारतान्तःपाति नाना देशाभिजन–पण्डितैः। मण्डिता भाति दुग्धेव या हि भारतधेनुतः।।२६।।
मातान्नपूर्णा यत्रास्ति पिता विश्वेश्वरो महान्। भ्रातरो ढुण्ढिराजाद्यास्तस्यै काश्यै नमो नमः।।२७।।
तत्र काश्यां महाराष्ट्राभिजनाः पण्डितोत्तमाः। पंक्तिपावन भूदेवा राजन्तेऽमितकालतः।।२८।।
येषां विरचितैर्ग्रन्थैर्मण्डिता सुरभारती। गौरवातिशयं धत्ते त्रिजगन्मान्यतां गता।।२९।।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

तेषामेवाग्रगण्यानां श्रेण्यामेकं विराजते। महाकुलं 'वरकल' इत्याख्यं विदुषां कुलम्।।३०।।
कुले यत्र समुद्भूता विद्वांसो बहवः पुरा। तपो–विद्या–सदाचार–निष्णाताः शीलशालिनः।।३१।।
कर्णाकर्णिकयाकर्ण्य कुलवृद्धमुखोदगतम्। वृत्तमेतद् यथाप्राप्तं बन्धुभ्यो विनिवेद्यते।।३२।।
गोपालभट्टतः पूर्वो वृत्तान्तोऽस्य कुलस्य यः। कुलेतिहास–विदुषां वृद्धानां मुखतः श्रुतः।।३३।।
गोपालभट्टादग्रे तु ग्रन्थस्यास्य हि लेखने। लिखितानि प्रमाणानि साक्षिवर्णनमेव च।।३४।।
प्रमाणमनुसृत्यायमितिहासः प्रकाश्यते। स्वबान्धवहितायैष सतां मार्गानुयायिना।।३५।।
अस्ति दक्षिणदिग्भागे भारते विन्ध्यपर्वतात्। वैदर्भदिशः परमः पावनः श्रीविलासभूः।।३६।।
साङ्गवेदविदां मुख्यैर्द्विजैः परमपावनैः।। भूषितः पावितश्चैव ख्यापितश्च जगत्त्रये।।३७।।
यत्रत्या काव्यरीतिः सा वैदर्भी धरणीतले। विश्रुता सुरभारत्यां कालिदासादिवन्दिता।।३८।।
विकाशभूमिरार्याणामुर्वरः सर्वसम्पदाम्। महाराष्ट्रस्यैक–देशे वैदर्भः स विराजते।।३९।।
तत्र मातापुरमिति ख्यातं परमसुन्दरम्। खर्वटं माहुरग्राम सन्निधौ[१] (नामक) विश्वपावनम्।।४०।।
यत्र पर्वतचूडायां दत्तात्रेयस्य सन्निधिः। एकवीरा रेणुका च यत्र नित्यं विराजते।।४१।।
आसीत् तत्रत्यविप्रेषु कुलमेकं महर्द्धिमत्। महर्षिवर कौण्डिन्य–गोत्रालङ्करणं भुवि।।४२।।
यस्य शाखा तैत्तिरीया वेदः कृष्णयजुः शुभः। आपस्तम्ब–मुनि–प्रोक्तं कल्पसूत्र सुशोभते।।४३।।
एकवीरापदाम्भोज–मकरन्दं पिबत् सदा। शैव शाक्त कुलाचार–पण्डितं पूर्ण–शाम्भवम्।।४४।।
वेदवेदार्थ–तत्वज्ञं श्रौतस्मार्त क्रियापरम्। अप्रतिग्राहि–विप्राणामग्रीयं सोमपीथिनाम्।।४५।।
कुलं, तत्र समुद्भूतः कश्चिद् धार्मिकपुङ्गवः। सोमयाजी भगवती भक्तोऽज्ञाताभिधः पुमान्।।४६।।
दशासन्नस्य सत्पुत्राः विद्वांसः कुलभूषणाः। पितृभक्ताः सदाचारनिष्ठा भागवतोत्तमाः।।४७।।
भार्याऽप्यासीन् मनोयोग्या विदुषी भाग्यभूषिता। अनसूयासमा नित्यं पति–शूश्रूषणे रता।।४८।।
अथ कालेन कियता वार्धक्ये समुपस्थिते। विरक्तः सर्वभोगेषु गङ्गास्नान समीहया।।४९।।
त्रिस्थली यात्रिका कामो भार्यापुत्रसमन्वितः। भूरि वित्तँ समादाय यात्रायामुपचक्रमे।।५०।।
पादचारेण सर्वापि यात्राऽनेन कृता पुरा। कोटिरौप्यस्वामिनापि श्रद्धातिशयवत्तया।।५१।।
नानाविधानि दानानि यथायोग्य विधानतः। पात्रेभ्यः प्रतिपाद्यायं परं तोषमुपागतः।।५२।।
लक्षादप्यधिका मुद्रा अनेन प्रतिपादिताः। त्रिस्थल्यां विप्रवर्येभ्यःइति वृद्धमुखाच्छ्रुतम।।५३।।
यात्रां समाप्य विधिवन्मोक्षमार्गपरायणः। पुत्रद्वयेन सहितो भार्यया च समन्वितः।।५४।।
ऋणानि त्रीण्यपाकृत्य वाण्या लक्ष्म्या च सेवितः। वाराणसीमूर्तिं वाञ्छन् काशीशरणमाययौ।।५५।।
विश्वेशपूजनपरो गङ्गा स्नान–परायणः। सत्सङ्गमाचरन् नित्यं वाराणस्यामुवासह।।५६।।
दशपुत्रेष्वष्टपुत्रा वृद्ध–पित्रोरनुज्ञया। निजाभिजनवैदर्भं पावनं समुपाश्रिताः।।५७।।
अथ कालेन विश्वेश–सायुज्यं समुपाश्रितौ। वृद्धौ तौ पितरौ सम्यगात्मानन्दकृतस्थिती।।५८।।
एवं स दीक्षितवरो द्विजराजतुल्यः। काशीस्थ–सद्वरकलाऽन्वयपद्म–सूर्यः।।
वाण्या श्रियाच महितो सह धर्मपत्न्या। सायुज्यमाप परमं परशम्भुरूपम्।।५९।।।

इत्याचार्य–श्रीमदमृतवाग्भव–प्रणीते वरकलवंशचरिते प्रथमः सर्गः।।

१) पाठोऽत्र सन्दिग्ध इव मातृकायाम्।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

श्रीः

अथ द्वितीयः सर्गः।

अथ विश्वेश—सायुज्यं गतयोः पुण्यजन्मनोः। अन्त्येष्टिकर्म सम्पूर्णं दमातापित्रोर्विधानतः।।१।।
कृत्वा सुतद्वयं योग्यमात्मनः कृतकृत्यताम्। सन्तोषं परमास्थाय परं वैराग्यमाययौ।।२।।
कान्यकुब्जमहाराजाधिराजा सचिवोत्तमः। सुतद्वयस्यास्यमातामह आसीत तदा सुधीः।।३।।
तत्रभ्रातृद्वये ज्येष्ठो विद्वान् श्रेष्ठगुणैर्युतः। प्रयागे वसतिं चक्रे प्रयागाहृतमानसः।।४।।
कलिन्दकन्याजान्हव्योः सङ्गमे प्रतिवासरम्। स्नान—सन्ध्यादि कर्माणि कुर्वन्नानन्दमाययौ।।५।।
शूश्रूषितः स्वपत्न्यायं तप उग्रं समाचरन्। वंशसंस्थापकं पुत्रं सम्प्राप गुणिनां वरम्।।६।।
प्राप्तप्रतिष्ठो विदुषां श्रेष्ठस्तुष्टः स्वभार्यया। वाराणस्यां वसन् लेभे कनिष्ठः पुत्रमुत्तमम्।।७।।
तत आरभ्य तस्यासीद वंशःकाश्यां प्रतिष्ठितः। इदानीं तु न कोऽप्यास्ते तद्वंश्यो दृष्टिगोचरः।।८।।
ज्येष्ठवंशस्तीर्थराज—प्रयागार्जित—भूमिकः। चिराय सुप्रतिष्ठोऽभूद गिरा लक्ष्म्या च सेवितः।।९।।
अद्भुतं समरे दृष्टवा शौर्यं सन्तुष्टमानसः। कान्यकुब्ज—महाराजाधिराजः प्रददौ मुदा।
सर्वाधिकार—सहितां यस्मै भूगोप्तृतां वराम्। विशाल—भूमिखण्डस्य प्रयागे सङ्गमस्थले।।१०।।
मातामहानुग्रहेण लब्ध्वा सेनापतेः पदम्। शूरोचितेषु कृत्येषु सोऽयं लेभे महद्यशः।।११।।
एतद्वंशभवः कोऽपि पुमान् दक्षिण भारते। पुरं वरकलानाम निरमादिति विश्रुतम्।।१२।।
अष्टशत्या अप्यधिक—वर्षाद् वंशोऽयमागतः। उत्तरे भारते चक्रे तदादि वसतिं निजाम्।।१३।।
एतद्वंश्याः कान्यकुब्जान् काश्मीरान्केचिदाश्रयान्। त्रिगर्त्तान् केचिदन्यांश्चेत्येवं वृद्धमुखाच्छुतम्।।१४।।
अस्मिन् वंशे महाविद्वान् भट्टोऽभूत् त्र्यम्बकाभिधः। तदानीन्तन विप्राणां वसिष्ठसदृशप्रभः।।१५।।
अस्य प्रयोगनैपुण्यमुभयोः शस्त्र—शास्त्रयोः। सममासीन् नरेन्द्राणां विप्रेन्द्राणां च नन्दितम्।।१६।।
अनेक मनुजेन्द्राणां मौलिभिः पूजितं सदा। पादपद्मद्वयं यस्य राजतेऽस्य निरन्तरम्।।१७।।
जलालुद्दीनापराख्याऽकबरेण विधर्मिणा। दुर्गो मोगलसम्राजा त्रिवेणीसङ्गमे शुभे।।१८।।
द्वित्रिषड्भूमिते वर्षे वैक्रमेऽपहतोऽभवत्। प्रसिद्धः सर्वदुर्गेषु सम्प्रत्यपि सुरक्षितः।।१९।।
अपहारात् तस्य पूर्वं तत्रत्या या वसुन्धरा। एतद्वंशप्रसूतानां गोप्यासीदाधिपत्यतः।।२०।।
तत्रत्यभूविनिमये प्राप्तासीद या मही तदा। एकदेशे प्रयागाख्यं नगरं तत्र साम्प्रतम्।।२१।।
शतवर्षादिव पूर्वं मुट्ठीगञ्ज इति श्रुते। आसीत् पुरस्यैकदेशे तदीयांशः कियानपि।।२२।।
एतद्वंशप्रसूतानामधिकारे[१] न साम्प्रतम्। दारागञ्ज इति ख्याते प्रयागांशे तु या मही।।२३।।
आसीत तदीयोऽत्यल्पांशः प्रत्न वृत्तान्तसूचकः। एतद्वंशस्य सविधे इदानीमपि वर्तते।।२४।।
अथ भट्टत्र्यम्बकस्य वंशे प्रादुरभूत् पुमान्। कश्चिद् विद्वांस्तपस्वी च वेदवेदाङ्गपारगः।।२५।।
श्रावयन् स कथाः पुण्याः भगवद्भक्ति भूषिताः। कृष्णद्वैपायन इव प्रपेदे मान्यतां भुवि।।२६।।
अथैकदा माघमासे श्रीमद्भागवतं शुभम्। पुराणं श्रावयन्नासीत त्रिवेणीसङ्गमे शुभे।।२७।।
तत्र श्रोतृसमूहेषु ब्रह्मचर्याश्रमास्थितः। शृण्वन्नासीत् कोपमूर्तिस्तपस्वी कश्चिदुत्तमः।।२८।।

१) साम्प्रतमेतद्वंश प्रसूतानामधिकारेऽसौ मही नास्तीति तात्पर्यम्। अल्पोंऽशस्त्वद्यापि तदधिकारे वर्तत इत्यग्रे सम्बन्धः।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

भट्टत्र्यम्बकवंश्यं स कथाश्रावणपण्डितम् । विदां वरं महाभागं तपस्वी त्वब्रवीदिदम् ॥२९॥
ममाभिमुख एव त्वं कथां श्रावय पण्डित। मा जातु श्रोतृवर्गेषु कस्याप्यभिमुखो भवेः॥३०॥
कर्तुमस्याऽशक्यतया तद्वचो विस्मरन् सुधीः। कदाचिदन्याभिमुखः श्रावयामास सत्कथाम्॥३१॥
निजवाक्यानादरेण ब्रह्मचारी स कोपभाक। देहं त्रिवेणी–सलिले जहौ केनाप्यलक्षितः॥३२॥
देहत्यागानन्तरं तु कोपवासनयान्वितः। ब्रह्मराक्षसतां प्राप ब्रह्मचारी स दुर्मतिः॥३३॥
तपः प्रभावमहितं कथाश्रावकपण्डितम्। ब्रह्मराक्षसभावेन तं पीडयितुमक्षमः॥३४॥
श्रोतृवर्गं तदीयं च शिशुवृन्दं पिपीड सः। नैकवारं बोधितोऽपि तामसीं वृत्तिमाश्रितः॥३५॥
पीडयित्वापि बहुशः समर्थो नाभवद् यदा। अपकर्तुं तदात्यन्तं पश्चात्तापमुपाययौ॥३६॥
अथ निर्वेदमापन्नः प्रशान्तमनसा स्थितम्। श्रोतृविद्वद् ब्रह्मवृन्दवेष्टितं करूणार्णवम्॥३७॥
नानाशास्त्रविधानज्ञं वरिष्ठं ब्रह्मवादिनाम्। तपोधनं भागवतं श्रावयन्तं महाकुलम्॥३८॥
मुक्तये शरणं प्राप ब्रह्मराक्षसभावतः। विनयावनतो भूत्वा साष्टाङ्गप्रणमन्नयम्॥३९॥
उवाच भगवन् सर्वान् मन्तून् मे सोढुमर्हसि। कृपया मोचयस्वाद्य ब्रह्मराक्षसभावतः॥४०॥
एवं ब्रुवाणं विप्रोऽसौ प्रेम्णोवाच तपोधनः। कथां भागवतीं पुण्यां श्रुत्वा मुक्तिमवाप्स्यसि॥४१॥
श्रुत्वैवं प्रेमवचनं दृष्ट्वा च करूणान्वितम्। स ब्रह्मराक्षसस्त्वेवं प्रार्थयामास तं पुनः॥४२॥
भवतामेव वंशेऽहं समुत्पन्नोऽस्यतो मया क्रियते प्रार्थना कापि तां भवान् मन्तुमर्हति॥४३॥
इतः प्रभृति युष्माकं वंशे मत्कारणात् सदा। मेखलादिशुभे कृत्ये महोत्सवदिने तथा॥४४॥
ब्रह्मचारी स्नापनीयः पूज्यः कौपीनवाससा। सत्कृत्य भोजनीयश्च प्रारम्भे शुभकर्मणाम्॥४५॥
इत्येवं प्रार्थनां श्रुत्वा करूणाहतमानसः। एवमस्त्विति होवाच स्ववंश्यानुग्रहेच्छया॥४६॥
तदाप्रभृति वंशेऽस्मिन् कुलाचारः समादृतः। अद्यापि सम्प्रचलति तत्कथानक–सूचकः॥४७॥
श्रावयित्वा भागवतं ब्रह्मराक्षसभावतः। मोचयित्वा स्ववंश्यं तं विप्रः सन्तोषमाययौ॥४८॥

भट्टत्र्यम्बकवंशजो भगवतीभक्तः कथावाचको
वंशालंकरणं तपोबलयुतो वाण्या श्रिया सेवितः।
लोकानुग्रहमाचरन् वरकलं वंशं समुल्लासयन्
शम्भोराचपदं कलिन्दतनया–गङ्गासरित्–सङ्गमे॥

इत्याचार्यश्रीमदमृतवाग्भवप्रणीते वरकलवंशचरिते द्वितीयः सर्गः॥

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

श्री:

अथ तृतीय: सर्ग:।

अथ कालेन कियता वंशेऽस्मिन् तनयद्वयम्। विद्वन्मान्यं सतां श्रेष्ठं प्रादुरासीन्महायश:।।१।।
स्वपांडित्यप्रतापेन रणकौशलतश्च यत्। राजभ्य: प्राप सम्मानं शासने चाधिकारिताम्।।२।।
अथैकदा नृपा: केचित् प्रणम्यानतकन्धरा:। प्रार्थयामासुरेकांतमेतदभ्रातृद्वयं प्रति।।३।।
तीर्थराजे प्रयागेऽत्र सन्त्वस्माकं पुरोहिता:। भवन्त: सर्वतो योग्या इत्येवं प्रार्थयामहे।।४।।
अथेतद्विषये सम्यग् विचारं चक्रतुर्मिथ:। भ्रातरौ विदुषां श्रेष्ठौ धर्माधर्मविचक्षणौ।।५।।
अप्रतिग्राहिणां श्रेष्ठे जातावावां कुले किल। पौरोहित्यं ततो योग्यं नैवावाभ्यां कदाचन।।६।।
एवं ज्येष्ठवच: श्रुत्वा कनिष्ठस्त्वेवमब्रवीत्। पौरोहित्यं न चेत् कुर्युरस्माद्दक्षास्तु पण्डिता:।।७।।
कर्मकाण्डस्य लोप: स्याज्झटित्येव न संशय:। म्लेच्छराज्येऽपि या श्रद्धा साम्प्रतं हृदि वर्त्तते।।८।।
आर्याणां सा न हातव्या धर्मरक्षण—कोविदै:। मूर्खा एते नाशयन्ति धर्मं तीर्थ—पुरोहिता:।।९।।
दुराचारा: कर्मकाण्ड—ज्ञान—शून्यास्तु सम्प्रति। पौरोहित्यं तत: कार्यमिति मे निश्चितं मतम्।।१०।।
कनिष्ठोक्तं वच: श्रुत्वा ज्येष्ठ आह पुनस्त्विदम्। आदौ पौरोहिती गर्ह्या तीर्थे गर्ह्यतमा तत:।।११।।
तां कुर्वतोऽवश्यमेव कुलं गर्ह्यं भविष्यति। दुराचारश्च मौर्ख्यं च कुले तेऽवश्यमेष्यति।।१२।।
कनिष्ठ: पुनराहेदं वचनं भ्रातरं प्रति। कर्मकाण्डं कारयित्वा तत्पारिश्रमिकं यदि।।१३।।
गृह्णीयां तत्र दोषो न कोऽप्यस्तीति मतं मम। धर्मसंरक्षणकृतं पुण्यं चाऽनुत्तमं भवेत्।।१४।।
प्रतिग्रहीष्ये न तथा यथा तीर्थ—पुरोहिता:। प्रतिगृह्णन्ति सत्येन प्रतिजाने तवाग्रत:।।१५।।
श्रुत्वैवं साग्रहं वाक्यं ज्येष्ठभ्राता कनीयस:। तत्रैव सम्पदं त्यक्त्वा निजां लक्षाधिकामपि।।१६।।
अब्रूवन्नेव कोपेन भार्यापुत्र—समन्वित:। एकवासा ययौ काशीं निवासाय प्रयागत:।।१७।।
तदाप्रभृति तद्वंश: काश्यामेव विराजते। अद्य यावत् सदाचारो विद्वद्भि: परिपूजित:।।१८।।
वंश: प्रयाग एवासीत् कनिष्ठस्य महर्द्धिमान्। पालयन् स्वप्रतिज्ञातं यथाशक्ति सतां मत:।।१९।।
एतद्वंशभवै: काश्यां प्रयागे च विशेषत:। पौरोहित्यं गयायां च किलासीत् समुपार्जितम्।।२०।।
स्वस्वामिकानि गेहानि त्रिस्थल्यां रचितानि तै:। सम्मानश्च महानाप्तो लोकानां वित्तवत्तया।।२१।।
आसार्द्धवर्षशतकादेतद्वंशभवा अपि। काशी निवासिनो जाता: पौरोहित्यपरायणा:।।२२।।
असत्प्रतिग्रहं त्वेते न कुर्वन्तिस्म जातुचित्। षट्कर्म निरता आसन् सम्मान्या विदुषां गणे।।२३।।
वंशावली न विदिता ह्येतद्वंशस्य साम्प्रतम्। यज्ज्ञातं तल्लिखाम्यत्र स्ववंश—हित—काम्यया।।२४।।
कस्याप्येतद्वंशजस्य दौहित्रोऽभूद् द्विजोत्तम:। भट्टआत्मारामशर्मा 'विंचूर्णे' इत्युपाह्वय:।।२५।।
तेन स्वमातामहतो वृत्ति: पौरोहिती तथा। भूमि: सुगेह—सहिता प्रयागे समुपार्जिता।।२६।।
दानरूपेण सम्प्राप्ता भूमि: सा गेहसंयुता। प्रयागे वर्ततेऽद्यापि तद्वंशे इति शुश्रुम।।२७।।
भट्ट—भट्टोऽनन्तराम शर्म्मा विद्वान् महाकुल:। दौहित्र एतद्वंशस्य काश्यामासीत प्रसिद्धिमान्।।२८!!
अस्मिन् वारकले वंशे पुमानेकोऽस्ति साम्प्रतम्। काश्यां काशीनाथ भट्ट इत्याख्य: स्त्रीसमन्वित:।।२९।।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

पितास्य काशीनाथस्य विद्वान् परमधार्मिक:। आसीद गणेशभट्टाख्य: सुशील: कर्मकाण्डवित्॥३०॥
'प्रकाशकर' इत्याख्य–कुलदौहित्रभूषणम्। ज्योतिष्टोमादियज्ञानां याजने पण्डितोत्तम:॥३१॥
काशीस्थ–विद्वन्–मान्यस्य राजमान्य कुलस्यच। धर्माधिकारि वंश्यस्य ढुण्ढि राज–बुधस्य य:॥३२॥
देवोपाख्यस्य बालाजी शर्मणो दुहितु: सुताम्। उद्वह्य कन्यां गार्हस्थे प्रविवेश विधानत:॥३३॥
तस्यां स्वर्ग गतायां तु कन्यां काश्चिदुद्वह्य स:। तस्यामुत्पादयामास काशीनाथाभिधं सुतम्॥३४॥
खर्त्वङ्केन्दुमिते[1] वर्षे वाराणस्यामयं द्विज:। शिवसायुज्यमापेदे शिवभक्ति–परायण:॥३५॥
गणेशभट्टस्य पिता विद्वान् परमधार्मिक:। आसीत् सीतारामभट्ट: ख्यातो वरकलान्वये॥३६॥
सहोदरो गणेशस्य सखाशर्मानुजोऽभवत्। पठितोऽपि दुराचारो वाराणस्यां स्वतन्त्रधी:॥३७॥
श्रौतस्मार्त विधानज्ञोऽप्ययं द्यूतादि सेवनात्। नाशित–स्वधनो निन्दां यात: पण्डित–मण्डले॥३८॥
जोश्युपाख्यानन्तराम–पण्डितस्य स्वसु: सुताम्। धर्माधिकारि–कुलजामुद्वह्य गृहितां ययौ॥३९॥
तस्यां स्वर्गं गतायां सोऽनार्यजुष्टपथं ययौ। सप्तसप्ताङ्क चन्द्राब्दे वाराणस्यां जहावसून्॥४०॥
जनिं लब्ध्वा सप्तनेत्रनन्देनन्दुमितेवैक्रमे। नष्टापत्यकलत्रोऽसौ निधनं[2] चन्द्रवासरे॥४१॥
गणेशभट्टस्य सखारामस्यापि च सोदरी। एकाज्येष्ठा सुशीलास्ति भगिन्यम्बाभिधानत:॥४२॥
काशीस्थ–विद्वन्मान्य श्री वामनाचार्य सूनवे। अभियुक्तसहायाय श्रीरमानाथ–शर्म्मणे॥४३॥
प्रकाशकर दौहित्रीं सीताराम स्वकन्यकाम्। अम्बाभिधानां प्रददौ पिता शास्त्रविधानत:॥४४॥
वैक्रमे द्विद्विनन्देन्दुमिते संवत्सरे गते। अम्बा प्राप जनिं काश्यां गणेशस्य स्वसा शुभा॥४५॥
तस्या: सुत: पुत्रयुक्त: सस्त्रीक: कुशलान्वित:। बाबाचार्याभिध: काश्यां वर्तते साम्प्रतं किल॥४६॥
एवं कनिष्ठवंशेऽस्मिन् ख्याते वरकलामिधे। सदाशिवादयो भट्टा:महाविद्वांसो येऽभवन् पुरा॥४७॥
तेषां वृत्तं नोपलब्धमतो न लिखितं मया। एतत् कनिष्ठवंशस्य कस्यचिद्भक्तिशालिन:॥४८॥
अनुग्रहायाविरभूद्व भगवान भक्तवत्सल:। मार्तण्डभैरवो देव: कदाचिद्व भक्तितोषित:॥४९॥
तदाप्रभृतिवंशेऽस्मिन्नस्य पूजा विधानत:। क्रियते मार्गशुक्लस्य षष्ठ्यां प्रतिवत्सरम्॥५०॥
काशिकायाचितोपाह्वबालम्भट्टस्य[3] शर्मण:। एतद्वंशभवैवागाज्ज्येष्ठ सापत्नमातृताम्॥५१॥
समृद्धि: सागता क्वापि वंशस्यास्य तु सम्प्रति। सम्पत्ति: सा चला यस्मात् पद्मपत्रजलप्रभा॥५२॥

विस्तार्य कीर्तिमभितो विदुषां समाजे
वाण्या श्रिया वरकलान्वय एष युक्त:।
प्राप्तोऽधुनास्ति लघुतां समयप्रभावात्
शम्भो: पुन: करूणया गुरूतां प्रयातु॥५३॥

इति श्री वरकलवशंचरिते तृतीय: सर्ग:।

१) ख + ऋतु + अङ्क + इन्दु – इति १९६० इति वत्सरे।
२) मृत्युदिने
३) अयाचितेत्युपनाम्न:

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

श्रीः

अथ चतुर्थः सर्गः।

अथ कालक्रमेणात्र ज्येष्ठवंशे महीसुरः। गोपालभट्ट इत्याख्यो वेदवेदाङ्ग–पारगः।।१।।।
धर्मशास्त्रार्थनिपुणो मीमांसान्यायकोविदः। वाराणसेयविदुषां मुख्यः प्रादुर्बभूवह।।२।।।
सरस्वतीसेवकेऽस्मिन् लक्ष्म्या नासीत्तथा कृपा। यथास्य पूर्वजेष्वासीत् प्रयागक्षेत्रवासिषु।।३।।।
श्रावयन् हि पुराणानि छात्रानध्यापयन् सदा। ब्रह्मयज्ञेन सन्तुष्टः कालं यापयतिस्म सः।।४।।।
श्राव्यमाणपुराणानां पुस्तकेष्वर्पितं विना। द्रव्यं नाङ्गीकरोतिस्म त्यक्तसर्वप्रतिग्रहः।।५।।
विदुषा पूर्वजेनास्य प्रयागे त्यक्त–सम्पदा। वृत्तिः कथा श्रावकाणामासीदनुमता तदा।।६।।
वाराणस्यां कुलीनस्य विदुषः कस्यचित् सुताम्। परिणीय यथाशास्त्रं गृहस्थाश्रममाययौ।।७।।
आराधयन् भगवतीं महात्रिपुर–सुन्दरीम्। अगस्त्यतुल्यो निष्कामं जपध्यानपरायणः।।८।।
दशाश्वमेध घट्टाख्य–गङ्गातीरस्य सन्निधौ। गृहमासीदस्य काश्यामिति वृद्धमुखाच्छ्रुतम्।।९।।
धर्मपत्न्यां समुत्पाद्य स्वानुरूपं सुतोत्तमम्। विधाय योग्यं तमथो शम्भु–सायुज्यमाययौ।।१०।।
अस्य गोपालभट्टस्य सिद्धिमान् प्रपितामहः। अनुग्रहेण सिद्धानां सम्प्राप चिरजीविताम्।।११।।
यो हि वारकले वंशे समुत्पन्नो महामतिः। ऋग्वेदाध्यायि–विदुषश्चाश्वलायन–सूत्रिणः।।१२।।
पञ्चप्रवरसंयुक्त गार्ग्यगोत्र–शिखामणेः। श्री काशीस्थ महाराष्ट्र ब्राह्मणप्रवरस्य च।।१३।।
अनेक–ग्रन्थनिर्माण–पण्डितस्य यशस्विनः । राजराजाकबरस्य विद्वदास्थानवित् पतेः।।१४।।
दैवज्ञानन्तपुत्रस्य नीलकण्ठस्य धीमतः। दौहित्रो भागिनेयस्तु गोविन्दस्य विदां प्रभोः।।१५।।
श्री काशीस्थ महाराष्ट्र–ब्राह्मणस्य महामतेः। आश्वलायनसूत्रस्य ऋग्वेदि–प्रवरस्य च।।१६।।
निर्णय सिन्धु निर्मातुर्भट्टवंशविभावसोः। कमलाकर भट्टस्य विश्वामित्र सगोत्रिणः।।१७।।
दुहिताऽभूद यस्य पाणि–गृहीती प्रथमा किल। काश्यां श्रौतविधानेन देवाग्निद्विजसन्निधौ।।१८।।
दत्तचापमिते वर्षे विक्रमार्काद् गते त्वयम्। माघे वसन्तपञ्चम्यां विवाहः समपद्यत।।१९।।
श्री काशीस्थ महाराष्ट्र हरितर्षि – सगोत्रिणः। कृष्णयजुस्तैत्तिरीयापस्तम्बकल्पशाखिनः।।२०।।
मौनीन्युपभिधानस्य ब्राह्मणस्य विपश्चितः। कन्ययाऽभूद् विवाहोस्य द्वितीयो वंशवृद्धिदः।।२१।।
महामाहेश्वर वर–निजतात–मुखाम्बुजात्। यथाशास्त्रमयं काले श्रीदीक्षां समुपेयिवान्।।२२।।
सकलां निष्कलां चापि महाकाम–कलामयम्। स्वरूपां भजमानो हि परं वैराग्यमाययौ।।२३।।
त्र्यशीत्यब्दमितं कालं श्रिया वाण्या च सेवितः। यापयित्वा गृहे सोऽयं परिव्राज्यं समाययौ।।२४।।
विचरन्. स महीमेतां यथाकालं यदृच्छया। सिद्धर्षिदेव–सञ्जुष्ट हिमालयमुपाययौ।।२५।।
सन्तुष्टमानसस्तत्र जपध्यानपरायणः। महामाया–प्रसादेन सिद्धानुग्रहमाप्तवान्।।२६।।
प्रावृण्मेघ सवर्णोऽयं नलिनीदल–लोचनः। विशाल–भाल स्मेरास्यो मेघगम्भीरनिःस्वनः।।२७।।
शुकनासो बृहत्कर्णो लम्बबाहुः प्रसन्नदृक्। बृहच्छिराः कृष्णकेश उदग्र कृश–विग्रहः।।२८।।
लोमवत् सर्वगात्रोऽयं परिवापितमस्तकः। कौपीनमात्रवसनः पाणिपात्रः प्रशान्तधीः।।२९।।
अनुग्रहाय लोकानां पूर्णकारूण्य मूर्त्तिमान्। अद्यापि विचरत्येव कृतिभिर्जातु लक्षितः।।३०।।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

गङ्गाद्वारे ब्रह्मकुण्डे सुभगङ्करणं परम्। दत्वा स्वदर्शनं जातु मामप्यनुगृहीतवान्॥३१॥
संल्लापोऽप्यभवत्तेन साकं मम कियानपि। तत् परिज्ञानद: कोऽपि क्षणं विस्मय कारक:[1]॥३२॥
गृहत्याग कथां श्रुत्वा मामकीं मन्मुखात् पुन:। साशीर्वादं साधुवादं प्रयुयोजात्मवित् स मे॥३३॥
उवाच स्वेच्छया किञ्चित् कुल–वृत्तान्त सूचकम्। तदत्र वंशचरिते निबद्धं दयया[2] मया॥३४॥
महाराजाधिराजस्याकबरस्य महामते:। बालभावे समादृष्टा नैकबारमनेन हि॥३५॥
विद्वांसो योगिनश्चैव यतय: संशितव्रता:। भूचरा: खेचरा: सिद्धा देवा दृष्टा ह्यनेकधा[3]॥३६॥
हिमालय प्रदेशेषु संसिद्धो विचरत्ययम्। काले कालेऽनुगृह्णाति शिक्षायोग्यांश्च शिक्षयन्॥३७॥
विदर्भत: समायाते काश्यां वरकलान्वये। अष्टादशोऽयं पुरूष आसीदिति तत: श्रुतम्॥३८॥

श्रेष्ठो ह्ययं वरकलान्वय–सम्भवानां
श्री सम्प्रदायविदुषां मम पूर्वजानाम्।
ब्रह्मर्षि वृन्द–महितां पदवीमवाप्तो
जीवंश्चिराय भजते परशम्भुभावम्॥

इति श्री वरकलवंश चरिते चतुर्थ: सर्ग:॥

श्री:
अथ पञ्चम: सर्ग:

अथ गोपालभट्टस्य तनय: पण्डितो महान्। रामभट्ट इति ख्यातो व्यासतुल्य: पुराणवित्॥१॥
अधीत्य विधिवद् ग्रन्थान् स्वपितु: शास्त्रकोविद:। पितृवृत्तिं समाश्रित्य कालं यापयतिस्म स:॥२॥
आसीदयं ब्रह्मविद्यानिपुणो नैव केवलम्। वाणविद्या मल्लविद्यास्वत्यन्तं निपुणोऽप्यभूत्॥३॥
अथोपयेमे विधिवत् सुतां शीलगुणैर्युताम्। वाराणसीस्थ विदुष: सम्भूतस्य शुभे कुले॥४॥
तया सन्तुष्टया सार्द्धं निजपत्न्या सुशीलया। यजमान: पञ्चयज्ञैर्भगवन्तं सनातनम्॥५॥
वाराणसीस्थ विदुषां समाजे मान्यतां गत:। काश्यामेवावसत् पुण्यं गार्हस्थ्यं परिपालयन्॥६॥
विश्वेशपूजनपरो विश्वनाथानुकम्पया। सुतद्वयमयं लेभे पुण्यशीलं गुणान्वितम्॥७॥
तत्र भट्टानन्तराम इत्याख्यो ज्येष्ठतामित:। बालकृष्ण इति ख्यातो गत: पुत्र: कनिष्ठताम्॥८॥
वेदे व्याकरणे तंत्रे पुराणे च कृतश्रम:। तात पादोपनीतोऽयं विद्वान् शीलगुणैर्युत:॥९॥
हृष्ठ पुष्ट समस्ताङ्ग: सौन्दर्ये मदनोपम:। वाण विद्यासु कुशलोऽनन्तरामोऽभवत् किल॥१०॥
कनिष्ठो बालकृष्णस्तु वैयाकरण–केसरी। मान्य: समस्तविदुषां काश्यां विद्वद्धुरन्धर:॥११॥
अनन्तरामो विधिवत् कुमारीं शीलसंयुताम्। परिणिन्ये रमानाम्नीं काशीवासि द्विजन्मन:॥१२॥
कन्येयमासीत् सुगुणा सुशीला वंशनन्दिनी। विश्वामित्र सगोत्रस्य भट्टवंश्यस्य कस्यचित्॥१३॥

१) विस्मय कारक: संलापोऽप्यभवदित्यन्वय:।

२) दययोवाचेति पद्योऽन्वय:।

३) अनेकधा दृष्टा इत्यनन्वय:।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

गार्हस्थ्यमुद्वहन् पुण्याः कथा भागवतीर्जनान्। श्रावयन् न्यवसत् काश्यां पितरौ तोषयन् भृशम्।।१४।।
अत्रान्तरे शुभाऽहल्या राज्ञी होलकराभिधा। महेश्वरपुरे रम्ये रेवातटे मालव–देशके।।१५।।
पुण्यश्लोका भारतीय पुरावृत्तेऽति विश्रुता। न्यमन्त्रयद् रामभट्टं पण्डितं विदुषां वरम्।।१६।।
अस्मात् कथां भागवतीं पुण्यां श्रुत्वा मनोहराम्। योग्यायास्मै ददौ योग्यां वृत्तिं सम्मान संयुताम्।।१७।।
पञ्चाशदधिकं रौप्यमुद्राणां शतकद्वयम्।। परम्परायै वंश्यानां भक्त्या वर्षाशनं ददौ।।१८।।
सुदृढं सुन्दरं गेहद्वयं काश्यां ददौ मुदा। सर्वाधिकारसहितं ब्रह्मपुर्यां[१] यशस्विनी।।१९।।
इन्दौर–राज्य–गेहादि सम्पत्तिर्यत्र वर्तते। इदानीमपि तत्रासीदियं ब्रह्मपुरी ननु।।२०।।
पुरूषद्वय पर्याप्तां सामग्रीं भोजनोचिताम्। परम्परायै वंश्यानां महाराज्ञी न्ययोजयत्।।२१।।
हेमातपत्र–सौवर्ण चामराद्यैस्तु सत्कृतः। परः सहस्त्रं रजतमुद्राभिः परिपूजितः।।२२।।
महाराज्ञया वरकलो रामभट्टाभिधः सुधीः। काश्यामागत्य सम्प्राप्त–गृहे वासं चकार सः।।२३।।
अथैकदा रामभट्टोऽनन्तरामेण संयुतः। महेश्वरपुरं गत्वा नर्मदातटगं शुभम्।।२४।।
राज्याधिकारितः स्वीयं वर्षाशनभवं धनम्। गृहीत्वा तुरगारूढ़–काश्यै गन्तुं प्रचक्रमे।।२५।।
मार्गेऽतिघोरे विजने विन्ध्यारण्ये बुभुक्षितः। परिश्रान्तः सपुत्रोऽयं विश्रमाय क्षणं स्थितः।।२६।।
रम्यं जलाशयं दृष्टवा स्थानं च सुमनोहरम्। निजपुत्रेण सम्मन्त्र्योपाविशत्तत्र निर्भयः।।२७।।
धनुर्बाणासि कुन्तादि शस्त्रास्त्र क्षेपपण्डितौ। सशस्त्रास्त्रौ पितापुत्रौ विश्रान्त्यै निर्भयौ स्थितौ।।२८।।
बद्धवाश्वौ पादपाभ्यां तौ सम्मार्ज्य धरणिं तथा। आस्तीर्यास्तिरणं वृक्षच्छायायां तस्थतुर्मुदा।।२९।।
अत्रान्तरे भिल्लमल्ला दस्युवृत्तिपरायणाः। आयातास्तत्र शस्त्रास्त्रसंयुतौ यत्र तौ स्थितौ।।३०।।
तेषामन्यतमो दस्युः कालाचलकलेवरः। कृष्णलोहितपिङ्गाक्षो विप्रौ प्रत्याययौ युवा।।३१।।
आयान्तं तं समालोक्य पितापुत्रावुभावपि। युद्धाय भूत्वा सन्नद्धावाहतुस्तरूणं प्रति।।३२।।
विप्रा वयं न सम्पीड्या युष्माद्दृक्षैर्विदां वरैः। कल्याणकाङ्क्षिभिर्नूनमिति धर्मविदां मतम्।।३३।।
श्रुत्वैतद्वचनं कञ्चिद् विहस्योवाच कैतवात्। सोपहासं भिल्ल–मल्ल–युवा तौ ब्राह्मणौ प्रति।।३४।।
समर्प्य द्रव्यमस्मभ्यं यदि जीवितुमिच्छथ। करांगुष्ठौ छेदयित्वा सुचिरं जीवतां युवाम्।।३५।।
श्रुत्वैवं कुपितो भट्टोऽनन्तरामोऽसिना क्षणात्। चिच्छेद भिल्ल–मल्लस्य गण्डशैलोपमं शिरः।।३६।।
अथानुयायिभिस्तस्य भिल्लमल्लैः सुदारूणैः। संग्रामोऽजनि तत्रैव विन्ध्यारण्यान्तरे घने।।३७।।
कृष्णमेघप्रतीकाश–भिल्लसङ्घेषु तावुभौ। बभतुः स्वर्णगौराङ्गौ विद्युन्मण्डल–सन्निभौ।।३८।।
निहता भिल्लमल्लास्तेऽनन्तरामेण संयुगे। श्रुतं सौभद्र वृत्तान्तं प्रत्यक्षं ददृशुस्तदा।।३९।।
निघ्नन् भिल्लान् भट्टरामः शरै राम इवाबभौ। विनिघ्नन् दण्डकारण्ये खरादीन् राक्षसानिव।।४०।।
सार्द्धप्रहरकालं तज्जन्यं घोरमभूद्वने। द्वापञ्चाशद् भिल्लमल्लास्तत्र याता यमालयम्।।४१।
हतशेषाः कान्दिशीकाः कुञ्जगह्वरभूमिषु। निलिल्यिरे भिल्लमल्ला भीतास्ते जीविताशया।।४२।।
निःसपत्नमथालोक्य काननं समराजिरम्। शुशुभाते विजयिनौ रणे भीमार्जुनाविव।।४३।।
अतिश्रान्तौ विद्धगात्रौ व्याकुलावशनीयया[२]। प्रारेभाते रसवतीं बुभुक्षा वारणाय तौ।।४४।।
विशश्रमौ रणश्रान्तो वृद्ध आस्तरणे पिता। पित्राज्ञयाऽनन्तरामस्तदा सूपमपाचयत्।।४५।।
पाचयन्नेव सहसा भिल्लबाणेन[३] घातितः। छिन्नग्रीवोऽनन्तरामो वीरो वीरगतिं ययौ।।४६।।

१) वाराणसीनगरस्यैकदेश एवेयं ब्रह्मपुरी।

२) अशनायापिपासे – कठोपनिषत्। ३) विषदिग्धेनेति।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

उत्तिष्ठन् गतधैर्योऽपि वृद्धो रामोऽपि तत्क्षणात्। अलक्षितेन बाणेन छिन्नशीर्षो जहावसून्॥४७॥
एवं द्वावपि तौ विप्रौ पितापुत्रौ रणाङ्गने। विन्ध्याटव्यां वीरगतिं ययतुः कीर्तिशालिनौ॥४८॥
यस्मिन् दिने मृतावेतौ द्वितीये दिवसे ततः। वधूभ्यामनयोर्ज्ञातं वैधव्यं हनुमन्मुखात्॥४९॥
ते द्वे अपि स्नुषाश्वश्र्वौ हनुमत्पूजने रते। हनूमद्भक्तिनिरते आसातेस्म दिने दिने॥५०॥
कुलवृद्धमुखादेवं विषयेऽस्मिन् श्रुतं मया। विस्मयोत्पादनं वृत्तं भक्तिमत्योर्द्वयोरपि॥५१॥
ताभ्यां प्रतिदिनं पूज्या मूर्तिरप्यास्ति साम्प्रतम्। वाराणस्यां ब्रह्मघट्ट—सविधे राजमन्दिरे॥५२॥
यस्मिन् दिने मृतौ विप्रौ तस्मिन्नेव दिने गृहे। रामभट्टस्य गृहिणी वृद्धोवाच स्नुषां प्रति॥५३॥
अज्ञातमेव चित्तं मे दुःखाद् रणरणायते। गार्हिकेषु पदार्थेषु चित्तं न लगति क्वचित्॥५४॥
दक्षिणं लोचनं वारं वारं फुरफुरायते। पतिपुत्रौ प्रोषितौ मे न जाने किं भविष्यति॥५५॥
श्रुत्वैवं पुत्रगृहिणी रमा शीलगुणान्विता। वृद्धां सान्त्वयितुं श्वश्रूमुवाचेदं वचस्तदा॥५६॥
महावीरोऽञ्जनीपुत्रः शिवमेवाचरिष्यति। आवाभ्यां प्राथनीस्तु स एव करूणानिधिः॥५७॥
स्वपुत्र लालनपरा स्नुषा तस्मिन् दिने गृहे। सांत्वयन्ती निजां श्वश्रूं तामसीमत्यवाहयत्॥५८॥
रात्रौ स्वप्ने निजां श्वश्रूमात्मानं च निरैक्षत। त्रुट्यत्—सौभाग्य कटकां मुण्डितालकमस्तकाम्॥५९॥
द्वितीये दिवसे प्रातर्भीता सा न न्यवेदयत्। श्वश्रवे स्वस्वप्नवृत्तान्तमेकान्ते च रूरोदह॥६०॥
यदाऽगातां दर्शनाय प्रातरूत्थाय मन्दिरे। मार्ग एवापशकुनान् बहूँस्ते पश्यतः स्म ह॥६१॥
न्यधायिषातां चरणौ हनुमन्मन्दिरे यदा। आत्मानं मन्दिराद् बाह्यमवालोकयतामुभे॥६२॥
क्षणादेवा[१] .... मूढयोः श्रुतिगोचरा। मन्दिरान्निर्गता काचित् प्रादुरासीत् सरस्वती॥६३॥
रणे वीरगतिं प्राप्तौ ह्यः काले युवयोः पती। सपिण्डीकरणं यावन्नागन्तव्यमतः किल॥६४॥
नश्वरं सर्वमेवैतदतो मा शुचतं युवाम्। समभावेन वर्तेथां सापेक्ष सुखदुःखयोः॥६५॥
अमानुषीमिमां वाणीं करूणासम्भृताक्षराम्। सान्त्वना—पूरितां श्रुत्वा प्रत्यागातमुभे गृहम्॥६६॥
अत्रान्तरे भिल्लमल्ल सङ्घान्यतमपूरूषात्। इन्दौर राज्य विपिनाऽध्यक्षश्रवनमागता॥६७॥
वार्तेयं सकला विप्र—रणकौशल वर्णिनी। द्वापञ्चाशददस्यूभिल्लमल्लनाशस्य विस्तृता॥६८॥
श्रुत्वाऽध्यक्षस्तत्र गत्वा विप्रदेहौ रणाङ्गणे। पतितौ वीक्ष्य दस्यूनां देहाश्चैव पुनः पुनः॥६९॥
संग्रामकौशलं धैर्यं प्रशंसन् वीरविप्रयोः। काश्यां विप्रगृहे वार्तां प्रेषयामास सादिनः॥७०॥
श्रुत्वा सर्वं सादिमुखाद् वृत्तान्तं पतिपुत्रयोः। दुःखशोकाकुलाऽत्यन्तं भट्टरामस्य गेहिनी॥७१॥
बालकृष्णामिधं पुत्रमाज्ञाप्य विदुषां वरम्। स्नुषायाः पुत्रयोश्चैव पालनाय जहावसून॥७२॥
दशाहाभ्यन्तरे पत्युर्मरणात् स्थविरा सती। सान्त्वयित्वाऽऽदिश्य पौत्र पालनाय स्नुषां प्रति॥७३॥

वरकल—कुल—दीपौ शस्त्रशास्त्र प्रवीणौ, पतिसुत वर रामानन्तरामौ द्विजौ तौ।
पतिसुतनिधनार्त्ता शीलिनी रामयोषा, प्रतिपदमनुगन्त्री शम्भु सायुज्यमाप॥७४॥

इति श्रीवरकलवशंचरिते पंचमः सर्गः॥

१) क्षणादेवाप्रतिपदोर्मूढयोः इति मातृकाद्वयेऽपि पाठः।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

श्री:

अथ षष्ठ: सर्ग:।

अथो वरकलोपाह्वो बालभट्टो विचक्षण:। रामभट्टस्य तनय: कनिष्ठ: कोविदो विदाम्॥१॥
वाराणसीस्थ–विदुषां वैयाकरणपुङ्गव:। धर्मशास्त्रविदग्रीय: आसीद् भूसुरपुङ्गव:॥२॥
पितुर्भ्रातुर्जनन्याश्च निधनेनातिदु:खित:। यथायोग्यं कर्म चक्रे सर्वमप्यौर्ध्वदैहिकम्॥३॥
अस्मिन् कालेऽनन्तरामभट्टस्यासीत् सुतद्वयम्। रमादेव्यां समुत्पन्नं सुन्दरं शीलसंयुतम्॥४॥
तत्राग्रजोऽभवद् भट्टगोपीनाथोऽभिधानत:। गोपालभट्ट इत्याख्यां कनिष्ठस्तनयोऽभवत्॥५॥
रमादेवीसुतौ वीक्ष्य सान्त्वयन्ती निजं मन:। चिन्तयन्ती पतिपदमञ्जनीसुतपूजिका॥६॥
पालयन्ती शिक्षयन्ती पुत्रौ शीलगुणान्वितौ। रामलक्ष्मणसङ्काशौ कालं यापयतिस्म सा॥७॥
अथ श्रीबालभट्टोऽपि निजभ्रातु: सुतावुभौ। भ्रातृजायां च धर्मेण पालयामास सुव्रत:॥८॥
मौञ्जीबन्धन संस्कारं योग्यकालेऽकरोत् तयो:। स्वशाखाध्ययनं चैव कारयामास तौ पुन:॥९॥
सुतादप्यधिकं प्रेम्णा पालयित्वा मनीषिणौ। रचयामास विदुषां मान्यौ काशी निवासिनाम्॥१०॥
बालभट्टस्यापि सुत: एक आसीदिति श्रुतम्। विद्वान् विवाहित: काश्यां तद्वंशो नास्ति साम्प्रतम्॥११॥
भट्टगोपीनाथ शर्मा वैयाकरणपुङ्गव:। फणिभाषित भाष्याब्धे: पारदृश्वाऽभवत्तदा॥१२॥
गोपालभट्टो वेदानां कण्ठपाठे कृतश्रम:। पदक्रमजटादीनामनन्यसदृशोऽभवत्॥१३॥
श्रौतकर्मविधानज्ञौ वेदव्याख्यान–पण्डित:। श्रीमद्भागवतादीनां कथाश्रावण–कोविद:॥१४॥
वैक्रमेब्दे नन्दराम वसुभूसम्मिते गते। द्वयोर्भ्रात्रोर्दायभाग: पितृव्येण विभाजित:॥१५॥
कश्चिदिन्दौर–राज्यस्थाध्यक्षोऽप्यासीन्निमन्त्रित:। तयोर्दाय विभागाय काश्यां स्थावरसम्पद:॥१६॥
दशाश्वमेधघट्टस्थ विद्वद् ब्राह्मण–कन्यकाम्। परिणीय तदा भट्टगोपीनाथोऽभवद् गृही॥१७॥
सम्प्रत्यस्यापि वंशो न विद्यते दैवयोगत:। अतिवृद्धा योषिदस्य चिरायासीदिति श्रुतम्॥१८॥
अनया पतिसम्पत्ति: स्वभ्रात्रे प्रतिपादिता। आसीदामरणं काश्यां वसन्ती स्वगृहे सती॥१९॥
अथ गोपाल भट्टोऽपि विभक्तो भ्रातृतस्तदा। निकटे पञ्चगङ्गाया वसत्या आगमत् किल॥२०॥
न केवलमयं विद्वान् आसीद बलवतां वर:। तदानीन्तन काशीस्थ बलिषु प्राप्त विश्रुति:॥२१॥
बलिनो भायका[1] मल्ला महान्तो महतामपि। आक्रामका देहबलाद्[2] यवनापसदा अपि॥२२॥
नियुद्ध–यष्टि–मुष्ट्यादि–सङ्ग्राम–निपुणादत:। पलायन्तेस्म सततं भीता धूर्त्ता दुरोदरा:॥२३॥
'तारे' उपाख्य–काशीस्थ विचक्षण–शिरोमणे:। सुतां श्रीरामचन्द्रस्य सुन्दरीं शीलसंयुताम्॥२४॥
उपयेमे गृहस्थित्यै त्रिवर्ग–सहकारिणीम्। सुवंशवृद्धयै कमलादेवीं नाम्नीं विधानत:॥२५॥
पितुर्वेश्मनि काशीति प्रथिता नामधेयत:। अल्पायुरेव हित्वा स शरीरं शम्भुतामिता॥२६॥
अस्या: सहोदरो भ्राता न्यायाधीशपदे स्थित:। हरिरामाभिधो विद्वान् काश्यामासीत् प्रसिद्धिमान्॥२७॥
सर्वनिर्णयमूर्धन्या: सर्वतोऽप्यपराभवा:। वर्तन्ते निर्णया अस्य ह्याङ्गलराज्येऽपि विश्रुता:॥२८॥
अस्या: सहोदरो ज्येष्ठोऽप्यासीदत्यन्त विश्रुत:। वाराणसीस्थ विदुषां मणिरामोऽभिधानत:॥२९॥
कोल्ब्रुकाख्याङ्ग्ल विदुषा प्रार्थितेन यशस्विना। अनेन रचिता ग्रन्था बहव: सन्ति विश्रुता:॥३०॥
तारे–उपाह्वय: सोऽयमत्रिगोत्रसमुद्भव:। वंशो दत्तकपुत्रेण काश्यां सम्प्रत्यपि स्थित:॥३१॥

१) भाययन्तीति भायका:। २) 'श्रयन' इति शोभन: पाठ:।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

अनया कमलादेव्या भट्टगोपाल पण्डित:। काश्यामुवास सततं गृहस्थाश्रममुद्वहन्।।३२।।
जीवन् श्रयन पौरोणिकीं वृत्तिं प्रतिग्रहविवर्जित:। सदा सदाचारपर: शिवपूजापरायण:।।३३।।
अस्य माता रमादेवी महाशक्तिमती सती। ज्येष्ठपुत्रमृते: पश्चादस्यैव सविधे स्थिता।।३४।।
गङ्गायां प्रत्यहं स्नात्वा शम्भुपूजां विधाय च। गङ्गाजलेन सम्पूर्य यमोनयत सा घटम्।।३५।।
अस्तीदानीमपि मया दृष्टो वङ्ग विनिर्मित:। स घटो धान्यभरणे विनियुक्तो महान् गुरू:।।३६।।
युवैको यं घटं लातुमिदानी क्षमते किल। लातिस्म वृद्धा स नित्यमङ्गुलीनां त्रयेण तम्।।३७।।
स्वमलंमानिना दृप्तापसदेनैकदा किल। पञ्चगङ्गाघट्टघट्टिदोनीयेन प्रयोजित:।।३८।।
अपशब्द: प्रमादेन देवस्य प्रेरणावशात्। पीडयन्त्यै निजां शाटीं वृद्धायै जाह्नवीतटे।।३९।।
तत्र तूष्णीं स्थिता वृद्धा गृहमागत्य सूनवे। कथयामास गोपालभट्टाय बलशालिने।।४०।।।
श्रुत्वातिकुपित: सोऽयं दण्डं धृत्वा करे गृहात्। निरगात्तं दण्डयितुमुद्दण्डं घट्टिनं क्षणात्।।४१।।।
दृप्तान् दण्डयितुं नित्यं सन्नद्धं दण्डधारिणम्। नवावतारं मनुजा जामदग्न्यस्य मेनिरे।।४२।।।
वार्तामिमां जना: श्रुत्वा शतशोऽथ सहस्त्रश:। निलिल्यिरे स्वगेहेषु पुरस्तस्य न कोऽप्यगात्।।४३।।।
श्रुत्वा वार्तामिमां घट्टी कापि दुद्राव तत्क्षणात्। उद्दण्डापसदै: साकं मन्त्रयित्वानुयायिभि:।।४४।।।
भीतो द्वादश वर्षाणि वाराणस्यां स नाययौ। अन्ते तत् सुतदारै: सोऽभिवन्द्य चरणाम्बुजम्।।४५।।।
प्रार्थितो भट्टगोपाल: प्रददावभयं यदा। आयात: स तदा काश्यां गतदर्पो भुजङ्गवत्।।४६।।।
एवं प्रभाव: काश्यां स भट्ट गोपालपंडित:। उल्लासयन् वारकलं वंशं ख्यातिं जगाम स:।।४७।।
त्रिपुरां सुन्दरीं देवीं महाकामेशरूपिणीम्। समाराध्य स्वजायायां सुतरत्नमवाप स:।।४८।।
सुतेन तेन मन्वान आत्मन: कृतकृत्यताम्। पितृणभारान्मुक्तोऽसौ परं सन्तोषमाययौ।।४९।।
जातकर्मादिसंस्कारान् यथाशास्त्रं विधानत:। नाम्ना तं रामकृष्णेति चकार सुतमुत्तमम्।।५०।।
समारम्भेण महता चौलं कृत्वा विधानत:। मौञ्जीबन्धन संस्कारमाचचारातिहर्षित:।।५१।।
गायत्रीदीक्षया सार्द्धं त्रैपुरीमपि दत्तवान्। स्वयं गोपालभट्टोऽसौ रामकृष्णाय सूनवे।।५२।।
अथ गोपालभट्टस्य वृद्धा माता रमाभिधा। वाराणस्यां जहौ देहं शिवसायुज्य काङक्षिणी।।५३।।
श्रीमान् गोपालभट्टोऽसावेतस्या और्ध्वदैहिकम्। विधाय विधिवत् कश्यां मातृऋणान् मोक्षमाययौ।।५४।।
निजसूनोर्बाल्य एव विवाहमकरोत् किल। रामकृष्णस्य कुतुकी भट्टगोपाल पण्डित:।।५५।।
अथ कालवशैनैवाऽचिरादेव जहावसून। पुण्ये वाराणसी क्षेत्रे भट्टगोपाल पण्डित:।।५६।।

अथ निजसमयेऽसावद्वितीय: प्रभावात्।
श्रुतिमतपरिनिष्ठ: श्रौतविद्वद्वरिष्ठ:।
वरकलकुलदीपो भट्टगोपाल शर्म्मा
सुरगणनुत काश्यां शम्भु सायुज्यमाप।।५७

इति श्री वरकलवंशचरिते काव्ये षष्ठ: सर्ग:।।

१) उभययदी धातु:। २) दुरूहार्थोऽयं शब्द:।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

श्री

अथ सप्तमः सर्गः।

अथ श्रीमद्वरकलकुलोदधिकलानिधेः। प्रभातस्मरणीयस्य पुण्यश्लोक शिखामणेः।।१।।
तदानीन्तन काशीस्थ पुराणविदुषां गणे। सार्वभोमपदस्थस्य कविवृन्द–शिरोमणेः।।२।।
शैव–वेदान्त–विज्ञानामद्वितीयस्य धीमताम्। सिद्धयोगिसदाचारार्यस्य प्रतिभावतः।।३।।
सन्मन्त्र–तन्त्र–यन्त्रादि–महाब्धेः पारदृश्वनः। साक्षात्कृतात्मतत्वानां वरिष्ठस्य महात्मनाम्।।४।।
गृहस्थस्यापि सततं पूर्णवैराग्य शालिनः। विद्वद् गोपालभट्ट श्रीतनयस्य महात्मनः ।।५।।।
श्रीबालकृष्णशास्त्रीति वाराणस्यां प्रथाजुषः। श्रीरामकृष्णशास्त्रीति नामान्तरवतः शुभम्।।६।।।
अस्मत्पितामहपितुर्यथाज्ञातं चरित्रकम्। वर्णयामि समासेन सन्तुष्ट्यै कुलजन्मनाम्।।७।।।
नेत्रसुप्ताष्टपृथिवीमिते विक्रमतो गते। बालस्यास्याभवज्जन्म शुभमित्यनुमीयते।।८।।
मातामहगृहे काश्यामुत्पन्नोऽयं शुभे दिने। पितरं मोचयामास पितृणाद्द गृहिबन्धनात्।।९।।।
पितामह्या शिशोरस्य पित्रा मातामहेन च। जन्मोत्सवो बहुद्रव्य–व्ययेन विहितो महान्।।१०।।।
नामकर्मोत्सव दिने त्वासीद् दैवविदां गणैः। तात्कालिकग्रहान् वीक्ष्य भविष्यद् वर्णितं पुरा।।११।।।
अयं शिशुर्वंशयशो विस्तारं गमयिष्यति। भवितायं भक्तवरो महापुरूषवन्दितः।।१२।।।
मातामहौ मातुलौ च पितरौ प्रीणयन् शिशुः। शुक्लपक्षशशीवायं प्रावर्धत दिने दिने।।१३।।।
अयमत्यन्त मेधावी सकृदेव श्रुतं दधत्। मेधावित्वे ख्यातिमाप काश्यां पण्डितमण्डले।।१४।।।
गर्भात् पित्राष्टमे वर्षे ह्युपनीतो यथाविधि। स्वशाखाध्ययनं चक्रे स्वल्पायासेन बुद्धिमान्।।१५।।
सिद्धयोगि सदाचार दीक्षां स्वपितुरेव सः। गायत्री दीक्षया साकं प्रापासौ तान्त्रिकीमपि।।१६।।
पितमह्या रमादेव्या वृद्धाया आग्रहेण वै। पितास्य विदधे बाल्ये पाणिग्रहण महोत्सवम्।।१७।।
अस्य पाणिगृहीतो सा लक्ष्मी देव्यभिधाऽभवत्। दुर्गानाम्नी पितुर्गेहे मैया बाईति विश्रुता।।१८।।
मेदपाट इति ख्याते देशे राजन्वतां वरे। सुनृपैः शासितचरे पूते भारतभूषणे।।१९।।
सुस्थाने राधवगडे सेनापतिपदे स्थितौ। पितामहः पिता चास्याः कुशलौ शस्त्रशास्त्रयोः।।२०।।
आस्तां गाभे इत्युपाख्य वंश।भूषणपण्डितौ। काशीनिवासिनौ विद्वन्मान्यौ मनुजपुङ्गवौ।।२१।।
गाभे गणेशभट्टाख्य आसीदस्याः पितुः पिता। कालः करालौ म्लेच्छानामसिपाणी रणेचरन्।।२२।।
भट्टः सदाशिव इति ख्यातोऽस्याः जनकोऽभवत्। दुर्दान्तम्लेच्छ संहारकारी रणविशारदः।।२३।।
काश्यामनेनाग्रहारा विप्रेभ्यः प्रतिपादिताः। सदाशिवेन भट्टेनानिके कोट्यधिपेन वै।।२४।।
दशाश्वमेधाख्यघट्टे 'गाभेब्रह्मपुरी' ति ते। अद्यापि केचिद् राजन्ते नष्टाः काल प्रभावतः।।२५।।
तदानीन्तन काशीस्थ वल्लभाचार्य पीठिकाम्। अध्यारूढश्च शास्त्राणमासीदध्यापकोऽप्यम्।।२६।।
दानिना कर्णतुल्येन धनिनाऽनेन जात्वपि। प्रायो गृहागतः कोऽपि नाभवद् विमुखीकृतः।।२७।।
अस्य मातामहो विद्वान काश्यां विद्वद्धुरन्धरः। अनेकग्रन्थ निर्माता श्रीमान् भारत भूषणः।।२८।।
नागेशभट्टविदुषः शिष्यमण्डलपुङ्गवः। पायगुण्डोपाह्व वैद्यनाथभट्टोऽभवत् सुधीः।।२९।।
सदाशिवसुतां दुर्गां देवाग्नि द्विजसन्निधौ। सुतो गोपालभट्टस्य रामकृष्ण उवाह ताम्।।३०।।
दत्तमासीद् बहुधनं पाणिग्रहमहोत्सवे। वाराणस्यां ब्राह्मणेभ्यः पितृभ्यां वरकन्ययोः।।३१।।
प्रत्यहं मासपर्यन्तमासीत् पिवत खादता। यथेच्छं जातिबन्धुभ्यो नित्यं क्रीडत मोदता।।३२।।
अथ श्रीरामकृष्णस्य रमादेवी पितामही। पितागोपालभट्टश्च दैवात् कालवशं गतौ।।३३।।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

अत्यन्तापत्ति समयेऽप्ययं धैर्यं मुमोच न। निरीक्षमाणो ज्ञानेन जगन्नश्वरतां मुहुः।।३४।।
जटापतीत्यू पाख्य श्री शिव रामाभिधाद् गुरोः। काशीस्थात् समधीत्यायमभवद् विबुधो महान्।।३५।।
तारे इति समाख्याताद् भट्टश्रीमणिरामतः। काशीस्थ विद्वन्मूर्धन्यादत्रिगोत्रसमुदभवात।।३६।।
अनेकगन्थनिर्मातुः स्वमातुलवराद गुरोः। ग्रन्थगूढानि विज्ञाय प्रापासौ कृतकृत्यताम्।३७।।
गार्हस्थ्य भारेणाक्रान्तः स्वल्प एव वयस्ययम्। विहायाध्ययनं चक्रे वृत्तिं पौराणिकीं खलु।।३८।।
नातिस्थूलो नातिकृशस्तप्त स्वर्ण समप्रभः। नलिनी पत्रनयनः सरलोन्नतनासिकः।।३९।।
विशालवक्षाः पुष्टांसोदीर्घबाहुर्गजश्रवाः। सुदीर्घ वर्ष्माऽऽरक्तोष्ठो विशालोन्नतभालवान्।।४०।।
स्निग्धपुष्टसमस्ताङ्गः स्पृहणीयतमोऽभवत्। विरेजे रामकृष्णोऽसौ यौवने कामसन्निभः।।४१।।
सर्वतन्त्रस्वतन्त्रोऽयं पुराणेष्वभवत् किल। पदवाक्यप्रमाणानि परिशील्य यथायथम्।।४२।।
गुणवानपि दुर्दैवादहिफेनमयं किल। विद्याया व्यरमन्नित्यं भक्षयन्नतिमात्रया।।४३।।
आराधयन् भगवतीक्षेत्रसन्नायासदीक्षितः। वाराणसी विहायासौ नागच्छत् क्वापि जात्वपि।।४४।।
इन्दौरराज्यसम्प्राप्यां वृत्तिं तत्याज निःस्पृहः। सर्वतोऽप्यप्रतिग्राही शिवभक्तिपरायणः।।४५।।
रात्रावेकाग्रमनसा प्रत्यहं ध्यानमास्थितः। आनन्दं विन्दतेस्मासावात्मानन्द सुनिर्भरः।।४६।।

स्मरहर नगरीस्थे विप्रवृन्देऽतिमान्यो
वरकुलदीपः शैवशास्त्रप्रवीणः।
स्वगुरूसमुपदिष्टां योगयुक्तिं वितन्वन्
समजनि परशम्भोः पूर्णपात्रं कृपायाः।।४७।।

इति श्री वरकलवंशचरिते काव्ये सप्तमः सर्गः।

श्रीः

अथाष्टमः सर्गः।

अथ वाराणसीवासि पौराणिक गणाग्रणीः। विद्वान् श्रीरामकृष्णाख्यः परां निर्वृतिमास्थितः।।१।।
सविधे पञ्चगङ्गायाः बिन्दुमाधवसन्निधौ। सुप्रसिद्धतमे स्थाने द्वारकानाथमन्दिरे।।२।।
प्रत्यहं श्रावयन् पुण्यां कथां भागवती शिवाम्। भगवद्भक्तिनिरतः कालं यापयतिस्म सः।।३।।
प्रेरणा पितुल्लापितेन नाम्ना ख्यातिमगादसौ। श्रीबालकृष्ण शास्त्रीति वाराणस्यां द्विजोत्तमः।।४।।
तदानीन्तन–काशीस्थ–विद्वत्पुङ्गव–मण्डले। कथां संश्रावयन् रेजे वेदव्यास इवापरः।।५।।
कथामेतन्मुखाच्छ्रोतुं महान्तो महतामपि। समायान्तिस्म विद्वांसः काशीस्थाः संघशः सदा।।६।।
अहिफेनमियन्मात्रं नासेविष्यत चेदयम्। व्यज्येष्यत व्याकरणे श्रीकाशीनाथ शास्त्रिणम्।।७।।
मुख्या एवं वदन्तिस्म तदानीन्तन पण्डिताः। 'धुले' इत्याख्य भट्टश्री सदाशिवमुखः सदा।।८।।
नाभविष्यन्निःस्पृहश्चेत् परे सन्तोषमाश्रितः। अत्युदारोऽप्रतिग्राही व्ययशीलश्च सर्वदा।।९।।
नूनं रूप्यकलक्षाणामभविष्यदयं पतिः। एवमाहुःस्म धनिनः सदा काशी निवासिनः।।१०।।
कथा समाप्त्यवसरे यद् भक्तैरर्पितं धनम्। पुस्तकोपरि तेनैव सन्तुष्टो जीविकां व्यधात्।।११।।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

मातास्यकमलादेवी सर्वसद्गुणशालिनी। बाल्य एव विहायैनं शिवसायुज्यमागता।।१२।।
जायास्य लक्ष्मीदेव्यासीदत्युदारा व्ययेरता। सर्वथैतत्समा तेन नाभवद् वित्तसञ्चय:।।१३।।
गाभे सदाशिवो भट्ट: पितास्य एकदावदत्। जामातुर्वीक्ष्य सततं नै:स्पृह्यं धनसञ्चये।।१४।।
हे पुत्रि वेत्सि सततं त्वदृऋते सन्ततिर्न मे। संसारे बन्धु सर्वस्वं त्वमेव मम सर्वथा।।१५।।
विज्ञायास्ते ज्ञापनीयं किमस्ति किल सुव्रते। तथापि वात्सल्यमिदं कर्तव्यं च पितुर्मम।।१६।।
उद्योजयति वक्तुं मां वचनं हितकारकम्। श्रृणुष्ववाहिता भूत्वा श्रुत्वैतदनुशीलय।।१७।।
नि:स्पृहस्त्वं तवपतिर्वित्तसञ्चयं न करोत्यसौ। तूष्णीं ध्यायन् किमप्यास्ते विद्वानपि निरन्तरम्।।१८।।
गार्हस्थ्यं व्ययभारश्च वर्धते हि दिनादि्नम्। पत्युस्ते रोचते मह्यं नैव कृत्यं किमप्यहो।।१९।।
अहिफेनमयं नित्यं भक्षयन्नतिमात्रया। वित्तयोगक्षेमचिन्तां मनसा न स्पृशत्यहो।।२०।।
प्रभूतं धनमद्यापि दत्तशेषं मदर्जितम्। वर्तते मत्सकाशेऽतो मद्गृहे वस सर्वदा।।२१।।
स्वापत्यसहिता हित्वा पति तमनवस्थितम्। त्वमेव मम वित्तस्य मत्पश्चात् स्वामिनी भवेत्।।२२।।
श्रुत्वैतं स्वपितुर्वाक्यं पतिव्रतपरायणा। लक्ष्मीदेवी शान्तभावादुवाच पितरं वच:।।२३।।
हित्वा निजं पतिं योषित् कुलीना विदुष: सुता। स्थातुमर्हति किं गेहे पितुर्वित्ताभिकाङ्क्षया।।२४।।
विद्वानपि भवान् भूत्वा कथमेवं ब्रवीति माम्। आर्यजुष्टोऽस्ति पन्था: किमयं तात ब्रवीतु माम्।।२५।।
सत्यं ब्रवीषि मे पुत्रि तथापि हितकृद्वच:। तव वृद्धस्य तातस्य नोल्लङ्घ्यं हि कदाचन।।२६।।
अलसस्ते पतिर्नूनं मदर्जितधनाशया। नै:स्पृह्यं व्यञ्जयन् भक्त्याडम्बरं वितनोत्ययम्।।२७।।
अतो मदाज्ञा नोल्लङ्ध्या यदीच्छसि निजं हितम्। अन्यथा मद्धनं तुभ्यमहं दास्ये न जात्वपि।।२८।।
श्रुत्वा पितुरिदं पत्युरपमानकरं वच:। लक्ष्मी देवी सती कोपादुवाचारक्तलोचना।।२९।।
अयोग्यो वाथ योग्यो वा पतिरेव गतिर्मम। याचिष्यते स भिक्षां चेद् भिक्षापात्रमहं भ्रिये।।३०।।
त्वद्धनं नेहते जातु मनसापि पतिर्मम। तृणायापि न मन्येऽहं साभिमानस्य ते धनम्।।३१।।
असत्यं लाञ्छनं यस्मात् पत्यावारोपितं त्वया। त्वद्गृहे[१] नागमिष्यामि यावज्जीवमहं तत:।।३२।।
त्वद्धनं दायरूपेण य: सम्प्राप्स्यति ध्रुवम्। तस्य तस्यैवान्ववायो नाशमेष्यत्यसंशयम्।।३३।।
लक्ष्मीदेवी स्वपितरं शप्त्वैवं गृहमागता। यावज्जीवं पितुर्गेहं नागता तद्दिनादनु।।३४।।
कुपितो वचनादस्या: पिता भट्ट: सदाशिव:। याचकेभ्यो धनं भूरि दत्वा शिष्टं धनं निजम्।।३५।।
मयूखकृन्नीलकण्ठ भट्टवंशयस्य नामनि। व्यलिखद् भागिनेयस्य भट्टरामेश्वरस्य स:।।३६।।
भट्टभट्टोपाख्य रामेश्वरस्यासीत् स्वसृद्वयम्। पूर्णाबाईति नाम्न्येका मन्का[२] बाईति चापरा।।३७।।
भारे....[३]इत्युपाख्याते पूर्णाबाई विवाहिता। मन्काबाई शेषाख्ये कुले सासीद्विवाहिता।।३८।।
द्वयोरप्यनयोर्वंश: साम्प्रतं नाशमागत:। मातुलस्य धनं लब्ध्वा गाभे सदाशिवस्य तत्।।३९।।
भट्टरामेश्वरो नष्टवंश: स्वस्वसृ सूनवे। शेषाख्य कृष्ण—पन्ताय तद्धनं दत्तवान् किल।।४०।।
तत्रापि वंशनाशोऽभूत् सतीशापप्रभावत:। तद्धनं साम्प्रतं यत्र सुखं तत्रापि नास्ति हि।।४१।।
अथैतया रामकृष्णो धर्मपत्न्या समं गृही। पत्यामुत्पादयामासाऽपत्यानि स विंशतिम्।।४२।।
म्रियन्तेस्म यथाकालं त्रयोदश तु शैशवे। सप्तानां जीवितानां तु वृत्तान्तो वक्ष्यते पुर:।।४३।।
तदानीन्तन पञ्जाबविषयाधिपतेर्महान्। सिक्खस्य रणजीताख्य राजस्याऽमात्यपुङ्गव:।।४४।।

१) त्वद्गृहं २) संदिग्धाक्षरं नाम। महाराष्ट्रभाषायां शुद्धमेतत्
३) अक्षरमत्रापि संदिग्धम्।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

रत्नामिश्रः समायातो वाराणस्यां स एकदा। विस्तृतां कीर्तिमश्रृणोद् रामकृष्णस्य विद्वदगणे।।४५।।
अथ श्रुत्वा कथां पुण्यां कार्तिके मासि सुव्रतः। रत्नामिश्रो रामकृष्ण मुखात् तच्छिष्यतां ययौ।।४६।।
भगवन्मन्त्रदीक्षां स गृहीत्वा नम्रभावतः। स्वगुरूं प्रार्थयामास दक्षिणां दातुमुद्यतः।।४७।।
किञ्चिदाज्ञापय भगवन् दक्षिणायै गुरो मम। शिष्यः कृतार्थी कर्तव्यः करूणावरूणालय।।४८।।
रामकृष्णो गुरूः शिष्यरत्नामिश्रस्य तद्वचः। प्रसन्नः शिष्यमाहेदं तपस्वी भोगनिःस्पृहः।।४९।।
प्रियशिष्य प्रसन्नोऽस्मि तव नम्रतयानया। कृतज्ञताप्रकाशेन सम्प्राप्ता गुरूदक्षिणा।।५०।।
श्रुत्वैवं तु रत्नामिश्रः पुनराह निजं गुरूम्। आज्ञापनीयं किञ्चित्तु सन्तोषो येन मे भवेत्।।५१।।
एवं शिष्यवचः श्रुत्वा गुरूराह पुनर्वचः। मह्यं तु नावश्यकता काचिदस्ति तथाप्यहम्।।५२।।
पृष्ठा स्वगृहिणीं वक्ष्ये सन्तुष्ट्यै तव सुव्रत। एवमुक्त्वा यथाकालमपृच्छद गृहिणी तदा।।५३।।
रत्नामिश्रः समाज्ञाप्यः किं विषयेऽत्र सुव्रते। वारं वारं कृतज्ञोऽयं प्रार्थयन् गुरूदक्षिणाम्५४।।
श्रुत्वा तु वचनं पत्युर्लक्ष्मी देव्यपि साऽब्रवीत्। अन्यत् सर्वं वस्तुजातं साम्प्रतं वर्तते गृहे।।५५।।
पर्याप्तिदुग्धदा काचिद् धेनुः शीलयुता पुनः। कृते शिशुनामानेया साम्प्रतं नास्ति सा यतः।।५६।।
श्रुत्वैवं रामकृष्णोऽपि रत्नामिश्रमुवाच तत्। रत्नामिश्रोऽपि तच्छ्रुत्वा विस्मितोऽत्यन्तमब्रवीत्।।५७।।
विहाय स्वर्णभूम्यादि किमाज्ञप्तमिदं गुरो। स्वर्णभूम्यादि विषये आज्ञापयतु मां गुरूः।।५८।।
एवं गुरूः शिष्यमाह वचनं निःस्पृहः पुनः। निजाज्ञापालनेनैव सन्तुष्यति सदा गुरूः।।५९।।
रत्नामिश्रोऽपि तच्छ्रुत्वा तूष्णीमेव तथाविधाम्। धेनुमानीय सम्भूष्य स्वर्णश्रृङ्गादिभिस्तुताम्।।६०।।
गुरवे प्राह भगवन् धेनुः स्वीक्रियतामियम् । अन्यां समानयिष्यामि यथाऽऽज्ञप्ता न चेदियम्।।६१।।
स्वर्णरत्नाद्यलङ्कारप्रभूतधन दक्षिणाम्। विहाय केवलां धेनुं स्वीचकार पुनर्गुरूः।।६२।।
रत्नामिश्रः पुनस्त्वेवं प्रार्थयामास देशिकम्। धेनोरस्या भोजनादेर्यावज्जीवं मयाव्ययः।।६३।।
कार्य एवं प्रार्थनां मेऽवश्यं स्वीकर्तुमर्हसि। रामकृष्णो गुरूः शिष्यतुष्टयै प्राह तथास्त्विति।।६४।।
निःस्पृहो रामकृष्णोऽसौ सदा सन्तुष्टमानसः। रात्रौ यात्रादिकं कुर्वन् दिवा शेतेऽस्य नित्यः शः।।६५।।
काश्यां पण्डितमूर्धन्याः श्रुत्वैतन्मुखवर्णिताम्। तां गङ्गा लहरीव्याख्यां वदन्तिस्म सदा ननु।।६६।।
श्रीमत् पण्डितराजेन जगन्नाथेन निर्मिता। ज्ञाता तु रामकृष्णेन सा गङ्गालहरी खलु।।६७।।
श्रुत्वा दुर्गा सप्तशती व्याख्यामेतन्मुखोदिताम्। तदानीन्तन विद्वांसः शङ्करं मेनिरेऽपरम्।।६८।।
विचित्राणि चरित्राणि बहून्यस्य महात्मनः। तानिविस्तरभीत्यात्र भण्यन्ते न मया खलु।।६९।।

पुण्यश्लोको निःस्पृहो रामकृष्णो
वाराणस्यां पण्डितानां वरिष्ठः।
लक्ष्मीनाम्न्या धर्मपत्न्या समेतो
गेहे तिष्ठन् शम्भुपादौ सिषेवे।।७०।।

इति श्रीवरकलवंशचरितेऽष्टमः सर्गः।।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

श्री

अथ नवमः सर्गः।

श्रीरामकृष्णरचिता ग्रन्थाः सम्प्रत्यपि स्थिताः। केचिदेतत् प्रपौत्र श्रीजगन्नाथस्य सन्निधौ।।१।।
अनेन रचिता ग्रन्था मयाष्टाववलोकिताः। तेषामन्यतमाः सन्ति जगन्नाथस्य सन्निधौ।।२।।
वाराणस्यां बुलानालासमीपे गृहमुत्तमम्। अस्यासीन्निजसत्ताकं विक्रीतं तदनेन हि।।३।।
अस्य[1] जीवदपत्येषु चत्वारस्तनया बभुः। कन्यानां च त्रयं योग्यं रामकृष्णस्य धीमतः।।४।।
आसीज्ज्येष्ठा तत्र कन्या नामातु मणिकर्णिका। गावणेकरवंश्याय दत्ता या भट्टशम्भवे।।५।।
वेदपाठिषु यः काश्यामापस्तम्बानुयायिषु। प्रसिद्धः शम्भुभट्टः स प्रथमो घनपाठिनाम्।।६।।
कृष्णयजुस्तैत्तिरीय—शाखाध्यायिविदां वरः। हरितर्षि सगोत्रोऽसौ काशिकोऽभूद् द्विजोत्तमः।।७।।
कन्या तु मध्यमा बालारम्यासीदतिसुन्दरी। दत्ता विद्वद्धुरीणाय घोण्डाचार्याय याऽभवत् ।।८।।
आलङ्कारिक विद्वांसस्तदानीन्तन काशिकाः। घोण्डाचार्यममन्यन्त द्वितीयं भट्ट—मम्मटम्।।९।।
कनिष्ठा रामकृष्णस्य जीवनीति प्रथां गता। बावाभट्टाभिधानाय दत्ताभूत् कन्यका किल।।१०।।
निर्णयसिन्धु निर्मातुः काशीस्थे वंश उत्तमे। कमलाकरभट्टस्य बाबाभट्टोऽभवत्तदा।।११।।
इदानिमपि वंशोऽस्ति विहायाद्यां द्वयोरपि। साम्प्रंत पुनराद्याया वंश कालवशं गतः।।१२।।
तत्र श्रीरामकृष्णस्य तनयेषु चतुर्ष्वभूत्। ज्येष्ठः श्रेष्ठगुणैर्युक्तो भट्टगङ्गाधरः सुधीः।।१३।।
द्वितीयो वैद्यनाथाख्यस्तृतीयो वामनाभिधः। चतुर्थो रघुनाथाख्य एकस्मादेक उत्तमः।।१४।।
गार्हस्थ्यमुद्वहन् काश्यां सोऽयं पण्डितमण्डले। चूडामणित्वमापेदे सदाचारपरायणः।।१५।।
कमलास्तोत्रमित्याख्यं विस्तृतं काव्यमुत्तमम्। रचयामास भाषायां मातृभक्तिपरायणः।।१६।।
अद्वितीयमिदं स्तोत्रं द्रष्टव्यं काव्यकोविदैः। षडशीत्युत्तरं यत्र वृत्तानां शतद्वयम्।।१७।।
सीतारामस्तोत्रमपि भाषायामति विस्तृतम्। प्रणीतवान् दर्शनीयमयं भागवतोत्तमः।।१८।।
रसपात्रं रसग्रन्थं रसिकौ रसमर्मवित्। भाषायामेव जग्रन्थ महाराष्ट्रकुलोद्भवः।।१९।।
शिवस्तुतिं दर्शनीयां गद्यपद्यमयीमयम्। गीर्वाणवाण्यां जग्रन्थ शैवशास्त्रविदुत्तमः।।२०।।
अम्बास्तोत्रं शक्तिभक्तो भगवत्यष्टकं तथा। गीर्वाणवाण्यां जग्रन्थ शाक्ततन्त्रस्वतन्त्रधीः।।२१।।
पद्यबद्धां व्यरचयत् श्रीमद्भागवतोपरि। हिन्दीभाषामयीं व्याख्यां देशभाषाविदां मुदे।।२२।।
दुर्गासप्तशती व्याख्यां लध्वीं मर्मप्रकाशिनीम्। चकार सुरभारत्यामयं दुर्गारहस्यवित्।।२३।।
एतदन्या कृतिदृष्टा न मयाऽतो न वर्णिता। गवेषयन्तु विद्वांसोऽतोऽन्यानपि कृतीः किल।।२४।।
एतत् कराङ्कितां वीक्ष्य रम्यामक्षरमालिकाम्। हृदि मुक्तावलीं नूनमङ्कितां शङ्कते जनः।।२५।।
वैक्रमे वत्सरेणऽनेन पञ्चाष्टाष्टेन्दु सम्मिते। पूर्णो निर्णयसिन्धुस्त स्वहस्तेन लिपीकृतः।।२६।।
रचितं कमलास्तोत्रं नन्दाग्रनवभूमिते। वैक्रमेऽनेन तत् सर्वं तल्लेखनेनैव सुस्फुटम्।।२७।।
एतन्मातुलभट्ट श्रीमणिरामविनिर्मितम्। श्रीसूक्तभाष्यमेतेन लिखितं वीक्षितं मया।।२८।।
भाषाग्रन्थस्तु गोस्वामि तुलसीदासनिर्मितः। दोहारामशलाकाख्य एतद्धस्तलिपीकृतः।।२९।।
अन्येऽप्यनेन लिखिता ग्रन्थायेसन्ति तेष्वपि। ये मद्दृष्टाः कतिपये तत्प्रपौत्र करे स्थिताः।।३०।।
एतस्य दिनचर्यायाः विषये तु विचित्रकाः। श्रूयन्ते वृद्धवदनात् सम्प्रत्यपि कथाः खलू।।३१।।
पुराणविषये सोऽयं वेदव्यास इवापरः। काश्यां प्रसिद्धिमगमद् विद्वत्पुङ्गव मण्डले।।३२।।

१) अस्यैति रामकृष्णस्य

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

अथैकदा निजामात्य रत्नामिश्र मुखोदिताम्। एतत्कीर्ति कथां श्रुत्वा गुणग्रहण कौतुकी।।३३।।
पञ्जाबदेशाधिपती रणजीत इति श्रुतः। सम्प्रेष्यामात्यमुख्यं स्वं दर्शनार्थी न्यमन्त्रयत्।।३४।।
निःस्पृहो रामकृष्णोऽसौ हित्वा वाराणसी पुरीम्। अनिच्छुर्गन्तुमन्यत्र प्राहामात्यमिदं वचः।।३५।।
अमात्यवर राजेन्द्रो विज्ञाप्यः प्रेमभावतः। भवानेव समागत्य वाराणस्यां हि जातुचित्।।३६।।
काश्यां वासं सतां सङ्गं गङ्गाम्भः शिवपूजनम्। लभतां सारसर्वस्वं संसारेऽपारसागरे।।३७।।
प्रतारितौ देवहतौ पञ्जाब गमनान्मम। एतच्चतुष्टयी लाभाद भवेतामुभावपि।।३८।।
भवदागमनात् काश्यां परं सौभाग्यभूषितौ। एतच्चतुष्टयी–लाभाद भवावामुभावपि।।३९।।
स्वयं पुत्रास्त्रयोऽनेन सम्पोष्योद्वाहिताः क्रमात्। कन्या अपि विधानेन पात्रेभ्यः प्रतिपादिताः।।४०।।
पञ्चयज्ञविधानेन भगवन्तं सनातनम्। सन्तोषयामास सदा भक्त्या श्रीयज्ञपूरूषम्।।४१।।
सव्यापसव्यमार्गज्ञो मध्यमार्गे सुपेशलः। षडध्ववनविच्छेदी[1] षट्चक्रोद्भेदपण्डितः।।४२।।
सिद्धयोगिन्यासचरूः[2] सिद्धाचारपरायणः। पूजयामास सततं पञ्चमीं पञ्चमीप्रियः[3]।।४३।।
पञ्चोपचारैर्विधिवन्महात्रिपुरसुन्दरीम्। पञ्चस्त्रोतोविधानज्ञः षडाम्नाय रहस्यवित्।।४४।।
पुत्रेभ्यः कन्यकाभ्यश्च यथाकालं यथायथम्। प्रददौ त्रैपुरीं दीक्षां महार्थोल्लास सारवित्।।४५।।
शैव–वेदान्त–वेतृत्व–व्यञ्जकं पद्यमुत्तमम्। एतदीयं लिखाम्यत्र पण्डितानामहं मुदे।।४६।।

सिद्धं तमिदं द्विधेव विततं यत् सन्ततं सन्नतं,
कान्तं शक्ति–शिवाख्यमाख्यमपि वा कृत्यत्रयं तद्यतः।
भूतं भूतमयं विभूति विलसद्विश्वाङ्ग गुह्यंपरं,
ब्रह्माण्डैक करण्डमद्यरजनी घस्नात्मकं तन्नुमः।।

एवं कीर्तिकरं पुण्यं चरित्रं लोकपूजितम्। वितन्वन् रामकृष्णोऽसावासीत् काश्यां महायशाः।।४७।।
खंद्विनन्देन्दुप्रमिते वैक्रमेब्दे गते शुभे। शिवसायुज्यमवापासाविति वृद्धमुखाच्छुतम्।।४८।।
निजवृत्तान्त विषये किञ्चिदुक्तमनेन यत्। शिवस्तुतिगतं पद्यबद्धमत्र विलिख्यते।।४९।।

''काशी क्षेत्र समुद्भवः सुकमला काशीपतेर्जाह्नवी
मुर्त्ति श्रीमदनन्तराम सुरमागोपालबिन्दोः परः।।
बिन्दुर्दीपवरात् सुदीप इव यो राकेन्दुतो यद्यपि
न्यूनः श्रीशिव एव रामपरमः कृष्णो वरास्तत्कलाः।।
श्रीमद्गभस्तीश्वर मङ्गलाख्य गौरी प्रसादः स इहाभिमानः।
अहं हि कर्ताऽपि ममैकदेशः केशश्च चेद्वक्ष्यति नातिचित्रम्।।
युगलीयुगलीलीला–लोल–लोल विलोचनः।
युगलीलावतारैक–बलदेवो हरिः परः।।

रामोऽत्रिगोत्रसम्भूततारामणी कुलोत्कलः। निष्कलङ्को बुधवरो जगत्यानन्ददो गुरूः।।
श्रीकाशीं पार्वतीं विश्वनाथं तारणकारणम्। श्रीमन्तं सशिवं रामं जटायुक्तां पतिं गुरूम्।।

१) वर्ण मन्त्र पदात्मकं कालाध्वत्रयम्, कला–तत्त्व–भुवनात्मकं च मिति देहाध्वत्रय बाह्यं जगत् षडात्मकम्। तदालम्ब्याभ्यसनीयास्त्रिकाचार योगक्रमाः षडध्वान आगमशास्त्रेषु प्रसिद्धा अपि साधारणजनतायामप्रसिद्धा एव।। २) न स्पष्टतामेति समस्तमिदं पदं, ननु सुव्याख्येयम्। ३) तान्त्रिक साधना निर्देशोऽत्रव्यज्यते। ४) एतानि पद्यानि श्री रामकृष्ण भट्टरचितानि।।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

सिद्धः श्रीमान् प्रविततयशाः सौरभैः पूरयित्वा,
वाराणस्यां विदितयशसां पण्डितानां गृहाणि।
विद्वन्मान्यं वरकलकुलं सार्थकं मण्डयित्वा,
प्रापोल्लासाद् हृदि वरकलां शम्भुतां रामकृष्णः॥५०॥

एवं निरूप्य चरितं प्रपितामहस्य
श्रीरामकृष्णविबुधस्य महाकुलस्य।
स्वात्मानमद्य गुरूमाकलयामि धन्यं
सत्यं परं वरकलं परशम्भुरूपम्॥५१॥

इति श्रीवरकलवंशचरिते नवमः सर्गः॥

श्रीः

अथ दशमः सर्गः।

अथोत्तमश्लोकवतां वरिष्ठस्य महात्मनः। श्री रामकृष्णविदुषोऽन्ववायं वर्णयाम्यहम्॥१॥
यदागाच्छिवसायुज्यं रामकृष्णो बुधोत्तमः। तदासंस्तनया अस्य चत्वारः सुनया इह॥२॥
चत्वारो निगमा एते ऋगाद्या अथवा इमे। पुरूषार्था मूर्तिमन्तो धर्माद्या अवनीतले॥३॥
आगताः सन्ति किमुवा लोककल्याण हेतवे। काशिका अन्वमंस्तैनानेवं पण्डितपुङ्गवाः॥४॥
एवमेतान् काशिकेया अन्वमंसत पण्डिताः॥४॥
तेषु ज्येष्ठः श्रेष्ठतमो भट्टगङ्गाधरः सुधीः। वेदवेत्ता कविश्रेष्ठो वाराणस्यां प्रसिद्धिमान्॥५॥
रसनन्दाष्टभूसंख्ये वैक्रमे वत्सरे गते। जनिं काश्यामलभत प्रसिद्धे विमले कुले॥६॥
वंशो वारकलोऽनेन कृतोऽन्वर्थोभिधानतः। वंशेन चासौ विहितः प्रसरत् कीर्तिमण्डलः॥७॥
पित्रासौ रामकृष्णेन जगन्नाथोभिधानतः। नामकर्मोत्सवदिने मण्डितो लोकसन्निधौ॥८॥
मातामहेन गदितः प्रमदातिशयादसौ। नाम्ना गङ्गाधर इति वंशद्वयविभूषणः॥९॥
अनैनवाभिधानेन लोकोऽयं विश्रुतोऽभवत्। काश्यां विद्वद्धुरीणानां मण्डले मान्यतां गतः॥१०॥
तातपादोपनीतोऽयं पञ्चवर्षवयोऽन्वितः। स्वशाखाध्ययनं चक्रे कोण्डिन्यान्वय—सम्भवः॥११॥
कृष्णभट्टो देवधरोपाख्योऽस्या भवदुत्तमः। काशीस्थ वेदविन्मुख्यो वेदाध्यापनकृद् गुरू॥१२॥
भयं श्री रामकृष्णस्य सहाध्यायी सतीर्थ्यकः। वेदाध्ययनकाले हि कृष्णभट्टः सखापि च॥१३॥
षोडशासँस्तदा बालाः एतस्य सहपाठिनः। मेधाविनः सुविख्यातमतयः संशितव्रताः॥१४॥

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

येषु द्वावति विख्यातौ मतिमत्त्वे बभूवतु:। मोरभट्टभिडे इत्याख्यात एकोऽपरस्त्वसौ।।१५।।
द्वयोरप्यनयोर्विद्वान् मेधावी च महाकवि:। गङ्गाधरो वरकल: ख्यात: काश्यामभूत् पुन:।।१६।।
लेले इत्याख्यया वित्त: श्रौतस्मार्त्त विचक्षण:। तित्तरिप्रोक्तशाखाया: विद्वान श्री भिकुदीक्षित:।।१७।।
दीर्घजीवितया प्राप यश: खलु महत् पुन:। षोडशस्वपि छात्रेषु स्थित: काश्यां प्रसिद्धिमान्।।१८।।।
सन्धाषोडशकं कृत्वा गणिकानां चतुष्टयम्। प्रपाठकान् कण्ठगतान् बुद्धिमन्तोऽपि कुर्वते।।१९।।।
सन्धानां सप्तकेनैव कण्ठस्थमकरोत् तदा। मेधातिशयवत्त्वेन मोरभट्ट: प्रपाठकम्।।२०।।
गङ्गाधरो वरकलो मेधावी तु ततोऽप्यसौ। सन्धानां पञ्चकेनैव पाठकं कण्ठगं व्यधात्।।२१।।
पदक्रमान्तं शाखाया अनेनाध्ययनं कृतम्। श्रौतसूत्रादिसहितं स्वल्पेन समयेन वै।।२२।।
एकदायं स्वगुरूणा प्रसेके षणसूत्रिणि। निबद्धश्च कूपे निक्षिप्त आसीत् पठनदण्डने।।२३।।
विधाय वेदाध्ययनं तदर्थज्ञानवाञ्छया। अधीतवान् निजपितु: काव्य—व्याकरणादिकम्।।२४।।
प्रतिभावानयं शास्त्रेष्वनेकेषु परन्तप:। पारङ्गत: कविरभूदुत्तम: काव्यकर्मणि।।२५।।
सरसानि महाराष्ट्र भाषायां कवयन्नयम्। पद्यानि सालङ्कराणि कविपुङ्गवतां ययौ।।२६।।
श्री काशीस्थ महाराष्ट्रा: षष्ठीपूजा महोत्सवे। पठन्त्यद्यापि रूचित: पद्यान्यस्य यशस्विन:।।२७।।
अहं शतादप्यधिकमस्य पद्यकदम्बकम्। पितृव्यज—जगन्नाथ गृहेऽपश्यं सुरक्षितम्।।२८।।
एतद्विनिर्मितान् ग्रन्थान् स्वकीये पुस्तकालये। वटोदर[1]—महाराज: स्थापयामास सुव्रत:।।२९।।
संस्कृते श्रीगणपति लीलावतारमञ्जरी। प्रणीता मुद्रिता चाभूद् वटोदर पुरे किल।।३०।।
तदन्तिमं पद्यमहं कालोल्लेखविधायकम्। प्रदर्शयाम्यत्र विद्वज्जन सन्तोषदायकम्।।३१।।

''शाके सोमाङ्क शैलावनियतशरदि श्रीशुभे विक्रमाख्ये,
मासेशे मार्गशीर्ष रवितनयदिने सामृते पौर्णमास्याम्।
श्रीमत्काशीस्थ विद्वत—प्रमुख वरकलोपाख्य सद्रामकृष्ण
ज्यायस्पुत्रेण गङ्गाधर—लघुमतिना कल्पितं प्रेक्षणीयम्।।''

एतद्विरचितं हारबन्धं बन्धान्तराणि च। पद्यानि गीर्वाणगिरा बद्धानि सुबहून्यपि।।३२।।
अनेन लिखितं दृष्टं नामलिङ्गानुशासनम्। मुक्ता सप्रभया लिप्या निजगेहे सुरक्षितम्।।३३।।
तप्तस्वर्णसवर्णोऽयं नातिपुष्ट कृशाङ्गवान्। तालप्रांशुर्महाबाहुर्जलजारूण लोचन:।।३४।।
उन्नतां सरलां नासां वहन्नर्धेन्दु भालवान्। विशालाक्षो बृहद्वक्षा: प्रसन्नास्यो गजश्रवा:।।३५।।
सुकपोलो रक्तनखो भृङ्ग सप्रभकेशवान्। उन्नतांस: शोण हस्तपादो भृङ्ग कनीनिक:।।३६।।
ऊर्जस्वलो नेत्रचित्तहारि लावण्यवानयम्। तत्काल सुन्दरतमो युवसु प्राप्तगौरव:।।३७।।
विद्वान् वपुष्मान् कुलवान् शीलवान् प्रतिभानवान्। स्पृहणीयतम: काश्यामस्तिस्म गुणवानयम्।।३८।।।
गतोऽनेकेषु राज्येषु वेदपाठे परीक्षित:। अनन्यलभ्यं सम्प्राप प्राथम्यं वेदपाठिषु।।३९।।
स्वर्णरूप्य महार्हानि वस्त्राणि सुबहून्यपि। सम्मानं च महान्तं स लेभे सर्वत्र पूजित:।।४०।।
कस्मिँश्चिद दाक्षिणात्यानां राज्ये ब्राह्मण शासिते। सब्रह्मचारिभि: साकमेकदा गतवानयम्।।४१।।
परीक्षितो वेदपाठे प्राथम्यमयमाप्तवान्। अलभन्त यथायोग्यं सम्मानं सहपाठिन:।।४२।।
दत्वा महार्हवस्त्राणि सहिरण्यानि पार्थिव:। परीक्षितेभ्य: सर्वेभ्यो वेदपाठिभ्य एकदा।।४३।।
प्रशंसावचनैस्तेषां वेदपाठे कृतश्रमम्। भूरि प्रशंसन्नपि तानाह वाक्यमरून्तुदम्।।४४।।

१) पाठ: संशयित इव यथा – वटोदर—महाराज: इति।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

पठन्ति वेदं जानन्ति नार्थं ते भारवाहका:। एवं श्रुतिर्भगवती वदन्ती वो विनिन्दति।।४५।।
उक्त्वैवं स 'स्थाणुरयमि' त्यादिश्रुति भाषितम्। श्रावयामास तान् सर्वान् प्रमाणं वेदपाठिन:।।४६।।
यद्येकोऽप्यभविष्यद्वो वेदार्थज्ञानवान् बुधा:। अभविष्यन्महमित्युवाच पार्थिव:।।४७।।
तत्तच्छास्त्र परीक्षासु समुत्तीर्णा विदांवरा:। हिरण्य भूमिवस्त्राद्यैरस्मद्राज्ये यथायथम्।।४८।।
निरन्तरं सत्क्रियन्ते तस्माद् यूयमपि द्विजा:। शास्त्राण्यधीत्यानेकानि समायात परीष्टये।।४९।।
तदैव ब्राह्मणकुले जन्म व: सार्थकं भवेत्। सन्तुष्ट: स्यामहमपि नूनं ब्राह्मण पार्थिव:।।५०।।
ये पाठज्ञा न तेऽर्थज्ञा येऽर्थज्ञा: पाठका न ते। सममिच्छमि नेत्रृत्वं युष्माकं ज्ञानपाठयो:।।५१।।
श्रुत्वैवं पार्थिवोक्तं ते समस्ता वेदपाठिन:। राजानमाहुर्वचनं भट्टगङ्गाधरं विना।।५२।।
भट्ट गङ्गाधरो राजन्नयमस्मत् पुरोगम:। अनेकशास्त्रनिपुणो वेदार्थज्ञानवान बुध:।।५३।।
पटु: शास्त्रार्थकरणे कथाश्रावणपण्डित:। पुराणज्ञ: काव्यकर्ता षड्दर्शनविदां वर:।।५४।।
परीक्षितव्यो भवता शास्त्रज्ञैरधुना नृप। सन्तोषयतु चात्मानं भवान् यातु कृतार्थताम्।।५५।।
राजाप्युवाच मसृणं विस्मयान्वितमानस:। विनयावनतो भूत्वा भट्टगङ्गाधरं वच:।।५६।।
क्षमस्व भगवन् मन्तुं मयाऽज्ञानवशात् कृतम्। प्रार्थये च परीक्षायां शास्त्राणां त्वत्प्रविष्टये।।५७।।
श्रुत्वापि वचनं राज्ञो भट्टगङ्गाधरो यदा। मौनमाश्रित्य नोवाच ज्ञानगम्भीर भाववान्।।५८।।
स्नेहवत्कोप सम्मिश्रमब्रुवन् वचनं तदा। सब्रह्मचारिणो गङ्गाधरं मधुरया गिरा।।५९।।
शास्त्राणां त्वदधीतानां सूपयोगो भविष्यति। कदा[२]यं भवान् मौनं किमित्या लम्बतेऽधुना।।६०।।
महान्तमपमानं च न लक्षयति किं भवान्। अत्र राज्ये काशिकानामस्माकं वेदपाठिनाम्।।६१।।
श्रुत्वैवं वचनं स्वेषामश्रुपूर्णी कुलेक्षणम्। भट्टगङ्गाधर: प्राह राजानं सूनृतं वच:।।६२।।
वेदपाठ परीक्षातु दत्ता द्रव्येप्सुना मया। सम्मानाय शिष्टानां वेदसम्माननाय च।।६३।।
सन्नद्धो यो भवद्राज्ये मां शास्त्रेषु परीक्षितुम्। वादजल्प वितण्डाभिर्जेतुमायातु सोऽद्य माम्।।६४।।
मामजित्वा परीक्षां मे ग्रहीतुं कोऽपि नार्हति। मत्तोऽधिकज्ञानवान् य: स मां शास्त्रे परीक्षताम्।।६५।।
भट्टगङ्गाधरस्यैवं न्याय्यमाकर्ण्य सद्वच:। स्वसभापण्डितानाह सादरं सस्मितं नृप:।।६६।।
सन्नद्धो योऽपि युष्मासु शस्त्रार्थाय विदांवर:। करोत्वनेन शास्त्रार्थं भट्टगङ्गाधरेण स:।।६७।।
त्वं समर्थस्त्वं समर्थ इत्येवं—वादिनो विद:। अन्योऽन्यं प्रेरयामासु र्विवादायादरेण ते।।६८।।
सन्नद्धतां गतैर्द्वित्रै: काठिन्येन विदां वरै:। विवादे विजयं लेभे भट्टगङ्गाधरो मुदा।।६९।।
लब्ध्वापि विजयं नम्रं भट्टगङ्गाधरं तदा। मुदा सम्मानयामासू राजा तत्पण्डिताश्च ते।।७०।।
सब्रह्मचारिभि: स्वीयै: प्रफुल्लैर्वेदपाठिभि:। पर:शतै: साधुवादैर्भट्टगङ्गाधर: स्तुत:।।७१।।
श्रुत्वा राजा गन्तुकामान् काशिकान् वेदवित्तमान्। समेत्य पण्डितै: साकं प्रार्थयामास सुव्रत:।।७२।।
गणेशितु: पुराणस्य भट्ट गङ्गाधरात् कथाम्। श्रोतुमिच्छामि तदयं पूरणीयो मनोरथ:।।७३।।
निवसन्तु मासमेकं भवन्त: सर्व एव हि। भवद्भिरपि सम्प्रार्थ्यो भट्टगङ्गाधर: सुधी।।७४।।
स्वीकृत्य प्रार्थनां राज्ञो भट्ट गङ्गाधर: कथाम्। गणेशितु पुराणस्य श्रावयामास पार्थिवम्।।७५।।
प्रसन्नमानसो राजा कथां श्रुत्वा विदां वरात्। सत्कृत्य स्वर्णवस्त्राद्यैर्गृहायानुमतिं ददौ।।७६।।
गणेशितु: पुराणस्य भट्ट गङ्गाधराय यत्। पुस्तकं प्रददौ राजा तदद्यापि सुरक्षितम्।।७७।।

१) पाठ: न स्पष्ट: मातृकायाम्

२) अत्र पाठो न स्पष्टो मातृकायाम्।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

पितृव्यज—जगन्नाथगृहे तद्दीक्षितं मया। गङ्गाधरो वरकल एवमासीत् प्रभाववान्।।७८।।
मैसूरकर इत्याख्य तात्यासाहेब शर्मण:। कृष्णयजुस्तैत्तिरीयापस्तम्ब कल्पशाखिन:।।७९।।
नामापरं जगन्नाथ—रावाइत्यस्ति यस्य हि। हरितर्षि सगोत्रस्य भगिनीमति सुन्दरीम्।।८०।।
काशी निवासिन: काश्यां देवाग्नि द्विज सन्निधौ। मत्नीत्वेनोपयेमे तां भट्टगङ्गाधर: सुधी:।।८१।।
सा पञ्चषाण्यपत्यानि जनयित्वा जहावसून्। स्वल्पे वयस्येव काश्यां शम्भो: सायुज्यमागमत्।।८२।।
अपत्यान्यप्यशेषाणि यातानि किल पञ्चताम्। परं वैराग्यमापन्नस्ततो गङ्गाधर: सुधी:।।८३।।
बान्धवै: सोदरैर्मात्रा प्रार्थ्यमानोऽपि नाकरोत्। द्वितीयमुपयामं स पश्यन् नश्वरतां मुहु:।।८४।।
रघुनाथ वैद्यनाथावनुजावस्य पञ्चताम्। स्वल्पे वयस्येव गतौ काश्यामेतस्य सम्मुखं।।८५।।
अनुजं वामनं पश्यन् विद्वांसं गतमन्धताम्। जपन् ब्रह्म सदैवायं कालं यापयतिस्म स:।।८६।।
खवेदमितवर्षोऽयं भ्रातरं वामनं तथा। मातरं भ्रातृपुत्रौ च हित्वा काश्यां जहावसून्।।८७।।

श्रीगङ्गाधरसोदरस्य तनयौ श्रीवैद्यनाथस्य यौ।
श्रीमोरेश्वरकृष्ण इत्यभिधया काश्यां प्रसिद्धिं गतौ।
श्रीगङ्गाधरभट्टदेह निधानानेहस्यमबालकौ
तावास्तां दशपञ्चवर्षवयसौ श्रीवामनालम्बिनौ।।८८।।
वाराणस्यां वरकलकुलालङ्कृति: शम्भुभक्तो
विद्वद् वृन्देऽतिशययशसा मण्डित: पण्डिताग्र्य:।
शान्तिं लब्ध्वा शमदमतितिक्षोपरत्यादिलभ्यां
शम्भोर्भक्त्या समलभतसद्भट्टगङ्गाधर: शम्।।८९।।

इतिश्रीवरकलवंशचरिते काव्ये दशम: सर्ग:।।

श्री:
अथैकादश: सर्ग:।

श्रीमद्वरकलोपाख्य रामकृष्णस्य धीमत:। श्री बाल कृष्ण शास्त्रीति वाराणस्यां प्रथाजुष:।।१।।
द्वितीयस्तनयो विद्वान् वैद्यनाथापराभिध:। भय्याशास्त्रीतिनाम्ना यो वाराणस्यां प्रसिद्धिमान्।।२।।
श्रीमद्भागवते ग्रन्थे शलाकासु परीक्षित:। उनषोडश वर्षोऽपि विद्वन्मण्डलपूजित:।।३।।
आसीत् पितामहोऽसौ मे पौराणिकगणाग्रणी:। अतिलावण्यवद्वर्ष्मा तारूण्य[1] मदनोपम:।।४।।
विशालभाल: प्रोत्तुङ्गदेहयष्टि: सुनासिक:। गजश्रवा: पुण्डरीकलोचन: सुवृहच्छ्रवा:।।५।।
गम्भीरनि:स्वनो गौर:पाटली कुसुमप्रभ:। स्निग्धवर्ण: पुष्टगात्रो बृहदस्थि: प्रतापवान्।।६।।
वृहदूरूर्महाबाहुरा रक्तौष्ठ: शुचिस्मित:। कपाटवक्षा जलजारक्तपाद—कराञ्चित:।।७।।
देहस्याति विशालत्वात् स्थानं व्याप्योपवेशने। य: पञ्चषटमनुष्याणां तिष्ठतिस्म महावल:।।८।।
बुन्देलखण्डवासिश्रीमहाराष्ट्राग्रजन्मन:। श्रीदामोदर पन्तस्य चिमानाम्नीं सुतां सतीम्।।९।।
भागिनेयीं पौण्डरीक श्रीविद्यापति शास्त्रिण:। उपयेमे पतिकुले रमानाम्नीं सुविश्रुताम्।।१०।।

१) पाठोऽयं सन्दिग्ध इव।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

अज्ञातनाम धामानो बहवः शिष्यतां गताः। आसनस्य तेषु जाने शिष्ययोर्द्वितयं तयोः॥११॥
एको बम्बे इत्युपाख्यः पौराणिकपदे स्थितः। श्रीवासुदेवशास्त्रीति वाराणस्यां प्रसिद्धिमान्॥१२॥
वाराणसीस्थविदुषां प्रसिद्धो वेदपाठिनाम्। गोखले इत्युपाह्वस्तु द्वितीयो भट्टकेशवः॥१३॥
द्वावप्येतौ लब्धवर्णौ बाल्ये काशी निवासिनौ। कोङ्कण ब्राह्मणौ काश्यां पश्यामिस्म दिने दिने॥१४॥
आषाढपौर्णमास्यां यावस्मद्गेह समागतौ। प्रतिवर्षं गुरूस्थानं पूजयामासतुः शुभौ॥१५॥
अभिन्नहृदयः कश्चिद् वयस्योऽस्य महाधनः। आसीत् काले इत्युपाख्यः कौङ्कण ब्राह्मणो युवा॥१६॥
यस्य सङ्गतिमासाद्य परस्त्रीलम्पटो ह्यभूत्। स्वर्गं याते स्वपितरि युवा पञ्चशरार्दितः॥१७॥
वाराणसेय तत्काले विद्वत्प्रमुखतां गतः। भट्ट गङ्गाधरो ज्येष्ठ सोदरस्तदनेहसि॥१८॥
वटोदर[1] महाराजः स्वसभामण्डनाय यम्। स्वपुरं धनमानादिदानैः सत्कृत्य नीतवान्॥१९॥
वाराणस्यां सोऽपि नासीद् यः कुकृत्यान्निवारयेत्। साध्वसं वा विवेकं वा दर्शयित्वानुजं पुनः॥२०॥
त्यक्त्वा स्वगेहं कस्याश्चित् कुलटाया गृहे स्थितः। शिष्य केशवभट्टेनाऽऽनीतः स्वेऽनुनयाद गृहे॥२१॥
अष्टाविंशत्यब्दवयाः विषमज्वरपीडितः। विहाय देहं विश्वेशं सायुज्यं गतवानयम्॥२२॥
वाराणस्यां वैक्रमेब्दे चन्द्ररामाङ्क भूमिते। चतुर्दश्यां शुचौ शुक्ले स्वर्गं यातः पितामहः॥२३॥
अम्बां भ्रातृद्वयं पत्नीं सुतं ज्येष्ठशिशुं तथा। हित्वा विलपतः सर्वान् स्वर्गं यातः पितामहः॥२४॥
पितामही रमादेवी पातिव्रत परायणा। षाण्मासिकं गर्भगतं वहतिस्म तदा शिशुम्॥२५॥
ज्येष्ठः सुतश्चतुर्वर्ष वयस्कोऽस्याभवत् पुनः। यो मोरेश्वर इत्याख्योऽभवत् काश्यां प्रसिद्धिमान्॥२६॥
कालेऽनुकूले सुषुवे सुतं मम पितामही। दशम्यां कार्तिके कृष्णे शनौ चन्द्रे मघास्थिते॥२७॥
वैक्रमे चन्द्र रामाङ्क भूमितेऽब्दे गते वृषे। लग्ने काश्यां प्रादुरभूदयं बालः पिता मम॥२८॥
पितृव्यौ तत्सखायश्च बालकं तत्पितामही। एनं श्री कृष्ण इत्याख्यां काश्यां चक्रुः शुभे दिने॥२९॥
नाम्नैनं बब्बन इति व्याजह्रु प्रेमभावतः। पितामहस्य माताच पितृव्यौ च गृहे सदा॥३०॥
अतः श्रीकृष्णशास्त्रीति प्रसिद्धोऽपि स्वबन्धुषु। सदा बब्बन शास्त्रीति वाराणस्यां प्रथामगात्॥३१॥
पिता ममायं श्रीकृष्णो बाल्ये रूग्णः कृशोऽपि सन्। आसीत् पाठालये मान्यः पण्डातिशयवत्तया॥३२॥
नातिगौरो नातिकृष्णो नातिस्थूलः कृशोऽपि न। नातिदीर्घो न ह्रस्वोऽपि यौवने सुन्दराकृतिः॥३३॥
पीनोन्नतांसो मुक्ताभविशाल नयनाञ्चितः। सुनासिको बृहद्भालः सुकपोलः प्रसन्नदृक्॥३४॥
प्रभावशालिवर्ष्माढ्यो गम्भीरघननिःस्वनः। लावण्यातिशयाकृष्टलोकचित्तः सुवेषवान्॥३५॥
काव्यालङ्कारसाहित्य—विद्याखण्डचतुष्टये। परीक्षायां समुत्तीर्णो वाराणस्यां बभूव यः॥३६॥
तैलङ्गराम—शास्त्र्यस्य विद्यागुरूपदे स्थितः। विद्यालये राजकीये संस्कृतग्रन्थपाठने॥३७॥
श्रीगङ्गाधरशास्त्री च पितृव्यपदमास्थितः। अध्यापयत सदा विद्या अनेकाः स्नेहवत्तया॥३८॥
रहस्यं तन्त्रशास्त्राणां यथावद् ग्राहयन् पुनः। पूर्णाभिषिक्तमकरोच्छ्रीविद्यामण्डलेऽप्यमुम्॥३९॥
निजतातानुजाद् विद्वद् वामनात् त्रैपुरीमपि। गायत्री दीक्षया साकं दीक्षामलभत श्रियः॥४०॥
पिता पितृव्यश्च मम श्रीगङ्गाधर शास्त्रिणम्। व्याजहतुः सदा गङ्गाधर काकेति मानतः॥४१॥
अतुल स्नेहवानासीज्जनके मम सर्वदा। सी आ ई पदारूढः श्रीगङ्गाधर शास्त्र्ययम्॥४२॥
नित्यानन्दः पर्वतीयः पन्तोपाख्योऽति पण्डितः। मेने कनिष्ठमनुजं पितरं मम सर्वदा॥४३॥
रामावतार पाण्डेयो महाविद्वान् महायशाः। श्रीदामोदरलालश्च गोस्वामिपदभूषितः॥४४॥

१) संशयितोऽत्र पाठः

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

सदाशिवो घोंड शास्त्रीतयादि सब्रह्मचारिणः। पितरं मम सर्वेऽपि स्निह्यन्तिस्मातिमात्रतः॥४५॥
बख्शी मुकुन्दझापन्त–नित्यानन्दादयश्च ये। ज्येष्ठाः सतीर्थ्या आसँस्ते स्नेहशीला पितुर्मम॥४६॥
सङ्गीतशास्त्रमर्मज्ञो विपञ्चीवादने पटुः। काव्यालङ्कार साहित्यसारज्ञो निपुणः कविः॥४७॥
भारतीयानेक भाषाविज्ञ उर्दू चं पारसीम्। आँग्लभाषांमारबींच वेत्तिस्माऽयं यथायथम्॥४८॥
तत्तद्दर्शन मर्मज्ञस्तन्त्रमन्त्रविशारदः। सव्यापसव्यमार्गज्ञः श्रीविद्यासमुपासकः॥४९॥
जैनप्राकृतविज्जैनदर्शनाध्यापने पटुः। वाग्मी वपुष्मान् मधुरालापः सुस्वरगायनः॥५०॥
अनेन रचितं श्रीमद्गायत्री स्तोत्रमुत्तमम्। एकवीरास्तोत्रमपि दृष्टयासीद् गृहे मया॥५१॥
पुण्यानन्दनाथकृतेश्री कामकलाविलासे। पञ्चिकारचिताऽनेन दृष्टमासीद् गृहपुस्तके॥५२॥
समस्या पूर्त्तयः काश्चिद् दृष्टाः पत्रेषु मुद्रिताः। काव्यकादम्बिनूयादौ गोपालाद्रि प्रकाशिते॥५३॥
द्रव्यं गृहीत्वारचयतच्छशिशेखरराजतः। गङ्गाभावावली नाम काव्यं तद्राजनामतः॥५४॥
शशिशेखरराजोऽयं गङ्गीय ब्राह्मणान्वये। उत्पन्नस्ताहिरपुरस्यासीन् नृपतिरर्चितः॥५५॥
भिनगा युवराजस्य प्राध्यापकपदे स्थितः। द्रव्यसम्मान भागासीत् कञ्चित् कालं पिता मम॥५६॥
गुलाब चन्द्र जैनस्य रत्न विक्रयिणः पुनः। श्रेष्ठिवर्यस्य मुम्बय्यामासीदध्यापकोऽप्ययम्॥५७॥
श्रीदेवकीनन्दनस्य बल्लभाचार्य पीठिकाम्। आरूढस्याचार्यपदे सभायां मुख्यपण्डितः॥५८॥
श्रावयंस्तं भागवतमासीत कञ्चिदनेहसम्। सहैव तेन देशेषु मुम्बायादिषु पर्यटन्॥५९॥
मित्रभावं गता आसन्नस्य कत्यपि भूमिपाः। विद्वांसः श्रेष्ठिनश्चापि बहवो मित्रतां गताः॥६०॥
शिष्या अप्यस्य बहवः स्थाने स्थाने प्रतिष्ठिताः। आसन् सदाचारयुतास्तत्तन्मन्त्रादिदीक्षिताः॥६१॥
प्रार्जयन्नपि भूयिष्ठं द्रविणं जनको मम। सदा निर्धन एवासीदमितव्ययितां भजन्॥६२॥
दानशौण्डतया नित्यं धनं सञ्चितवान् नहि। एकदा दस्युभिश्चायं लुण्ठितो निःस्वतां गतः॥६३॥
वेरूलकर वंश्यस्य वेणीरामस्य कन्यकाम्। धर्माधिकारि–गोपाल–पन्तस्य दुहितुः सुताम्॥६४॥
धन्वधूपमितेवर्षेबसन्तपञ्चमीदिने। उपमेये विधानेन यस्वां जातः सुतोऽस्म्यहम्॥६५॥
पितृगेहे पुत्तलीति राधाख्या पतिमन्दिरे। मम माता त्रिवर्षं मां हित्वा शिवपदं गता॥६६॥
रामस्य जोश्युपाख्यस्य या वेदविदुषः सुता। दशपुत्रस्य रामेश पन्तस्य दुहितुः सुता॥६७॥
पितुर्ममाभवत् सैव द्वितीया सहधर्मिणी। शुक्रशुद्धदशम्यां हि वेदर्त्वेन्दुवत्सरे॥६८॥
रामचन्द्र इति ख्यातः सोमनाथाऽपरामिधः। अस्ति यस्याः सुतः काश्यां वेदपाठे कृतश्रमः॥६९॥
पिता मम वरकलोपाह्वः श्रीकृष्णपण्डितः। उत्पादयामास पत्न्यां कन्यामेकां सुतद्वयम्॥७०॥
प्रथमायां द्वितीयस्यां सुतमेकं सुतां च यः। सुताद्वयं सुतश्चैको मृताः शैशव एव हि॥७१॥
वाराणसी महाराजाद् राज्ये मत्तात एकदा। कस्मिंश्चिच्छासकपदे कार्यं कर्त्तुं समीरितः॥७२॥
शिक्षा विभागाध्यक्षस्य पदे स्वीकृतिमाप्रवान्। दैवज्ञमापृच्छय दिनं कार्यारम्भेऽकरोत् स्थिरम्॥७३॥
स्थानग्रहणात् पूर्वमेव ज्वरावेश–प्रपीडितः। वपुषो निर्वलत्वेन नाऽगात् कार्यालय तदा॥७४॥
वर्धिष्णुना प्रतिदिनं ज्वरेणाशक्ततां गतम्। रक्तातीसार रोगोऽपि सहसैनमबाधत॥७५॥
एवं मासद्वयं भुक्त्वा रोगजातं पिता मम। अत्यशक्तः शरीरेण वाराणस्यां जहावसून्॥७६॥
पिता मम पितृव्यश्चस्वदायं चक्रतुः पृथक्। नवम्यां श्रावणे कृष्णे चन्द्रर्ष्यङ्केन्दुवत्सरे॥७७॥
मेलनं वर्त्तनं सर्वं भाषणं च समाप्य तौ। पृथक् पृथग् गृहे वासं तदाप्रभृति चक्रतुः॥७८॥

१) संशयितोऽत्रपाठः मातृकायाम् वेदर्त्वङ्केन्दुवत्सरे इति पाठः स्यात् शुद्धः।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

अनुभूय ब्रह्मभूयं दत्त्वा च मह्यमाशिषः। त्यक्त्वा देहं मुनिर्ब्रह्म सायुज्यं गतवानसौ।।७९।।
संन्यासिनो यथाशास्त्रं पितुः कर्मोर्ध्वदैहिकम्। निर्दिश्यमानं विद्वद्भिः श्रीकाश्यां समपादयम्।।८०।।
आगङ्गा मज्जनादाचसमाराधन कर्मतः। निखिलं कर्म शास्त्रोक्तं द्वादशाब्द वयस्कतः।।८१।।
कारयामास मत्तः स दुःखवेगाद् रूदन्नपि। मत्पितामह शिष्यस्तु गोखले भट्टकेशवः।।८२।।

वरकल—कुलज—श्रीकृष्णशास्त्री पिता मे
सपदि विलपतः स्वान् पुत्रदारान् विहाय।
अविगत विधुवेदोऽब्दोऽपि[१] सन्त्यस्य तूर्णं
सुरबरनुत काश्यां शम्भुसायुज्यमाप।।८३।।

इति श्रीवरकलवंश चरिते एकादशोऽयं सर्गः

१) विद्युतेदाब्दः ४१ वर्षीयः

विक्र० १९३१ का. कृ. १० (दशमी) शनिवारे

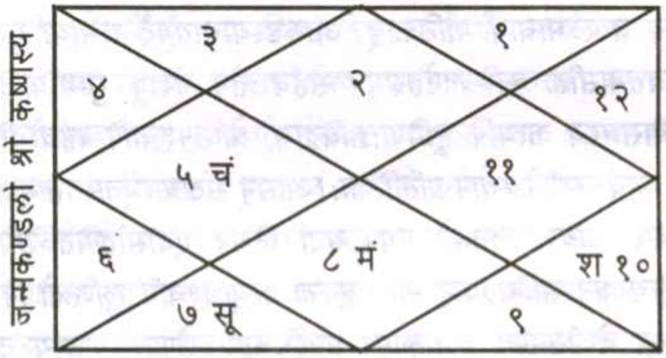

श्री

अथ द्वादशः सर्गः।

श्रीरामकृष्णपुत्रस्य विचक्षणशिरोमणेः। श्रीमद्वरकलोपाह्ववैद्यनाथस्य बुद्धिमान्।।१।।
मयूरेश्वर इत्याख्यो धार्मिको ज्येष्ठ आत्मजः। कृष्णयजुस्तैत्तिरीय शाखाध्यायिविदां वरः।।२।।
वाराणस्यां सामगानां निपुणेषु यशस्विनाम्। भजमानः श्रौतकर्मकाण्डवित्सु सभाजितः।।३।।
चयनाप्ते योमसोम प्रमुखेषु मखेषु यः। आर्त्विज्यं कृतवान् सोऽयमार्त्विजकरने पटुः।।४।।
हृष्टपुष्ट समस्ताङ्गो मल्लविद्या विचक्षणः। चन्द्रगौरो नातिदीर्घो नातिस्थूलो महाबलः।।५।।
केषाञ्चिदासीन्मल्लानां यूनां हि गुरूतां गतः। गुह्यानि मल्लविद्यायाः शिक्षयन् योधयश्च तान्।।६।।
शिष्यान् नित्यं पाठयतः सामानिच यजूंषि च। बहवः शिष्यतां याताः ब्राह्मणा अस्य धीमतः।।७।।
अस्य विद्यागुरूः काशीवासी लेले उपाख्यकः। सहपाठी वरकल भट्टगङ्गाधरस्य यः।।८।।
कौङ्कणब्राह्मणः श्रौतस्मार्त कर्मविचक्षणः। काशीस्थ विद्वद् धौरेयसम्मान्यो वेदपारगः।।९।।
अध्यापकस्तैत्तिरीय शाखाया भिकुदीक्षितः। आसीद् यशस्वी मतिमान् बाल्ये दृष्टो मयाप्ययम्।।१०।।
सामगान गुरूश्चास्य गणेश भट्टवापटः। कौङ्कणब्राह्मणस्त्वासीत् काशीवासीविचक्षणः।।११।।
गृहे वसन्नयं पञ्चमहायज्ञैश्च तोषयन्। स्नानसंध्यादिभिः कृत्यैर्भगवन्तं सनातनम्।।१२।।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

गार्हस्थ्यं पालयन् श्रौतस्मार्त्त कर्माणि कारयन्। विद्यार्थिनः पाठयँश्च कालं यापयतिस्म सः।।१३।।
बुन्देलखण्डेऽस्य जन्माभवत् मातामहालये। स्थाने श्रीनगराख्ये च ब्रह्मक्षत्रावृते पुरे।।१४।।
अस्यानुजो मम पिता प्रभूतं स्वार्जितं धनम्। कुटुम्ब भरणायास्मै सदैवार्पयतिस्म हि।।१५।।
अस्य पत्नी जामदग्न्य श्रीवत्सर्पिसगोत्रिणः। श्री काशीस्थ महाराष्ट्र ब्राह्मणस्य विपश्चितः।।१६।।
आश्वलायनशाखीय ऋग्वेदाध्यायिनः किल। द्वैतवादिवैष्णवस्य मध्वाचार्यानुयायिनः।।१७।।
कृष्णाचार्यस्य तनया रींवा नगरवासिनः। मैयानाम्नी पितृगृहे पतिगेहे सरस्वती।।१८।।
वाराणस्यामस्ति यस्याः कन्यैका द्वौ सुतौ तथा। जीवन्त्यद्यापि यत्कन्या ललितानामतः किल।।१९।।
मोरेश्वरः पितृव्यो मे जनयामास सुव्रतः। नवापत्यानि षट्तत्र शिशुभावे मृतानि तु।।२०।।
ज्येष्ठः सुतो जगन्नाथ भट्टः काश्यां प्रसिद्धिमान्। त्रयोविंशत्यब्दवया एव विद्वत्सु पूजितः।।२१।।
यस्य जन्माभवत् काश्यां चन्द्रतुनवभूमिते। गते ज्येष्ठासिताष्ठम्यां वैक्रमे मिथुनोदयो।।२२।।
कृष्ण यजुंस्तैत्तिरीय शाखायां पाठपारगः। पदक्रमान्तपाठे हि शलाकासु परीक्षितः।।२३।।
तत्कालिकेषु काशीस्थविद्वत्सु प्रथमोऽभवत्। वाराणसी महाराजाल्लेभेऽयं पारितोषिकम्।।२४।।
प्रतिवर्षं रूप्यकाणां शतं यत्रास्ति निश्चितम्। पञ्चवर्ष कृते लब्ध्वाऽधीयानोऽयं जटाघनौ।।२५।।
सामगानां मुख्यतमो वरिष्ठः कर्मकाण्डिनाम्। स्वल्पे वयस्येव महाविद्वान् जातोऽस्ति साम्प्रतम्।।२६।।
अस्य विद्यागुरूः काश्यां लेले श्रीभिकुदीक्षितः। देवोपाख्यो रामशर्मा विद्वान् कौशिकगोत्रजः।।२७।।
दामोदरो जोष्युपाह्वो श्रीभार्गवगोत्रजः। मौरेश्वरः पिता चास्य विद्यागुरूपदे स्थित।।२८।।
काशिकाऽनन्द दैवज्ञवंशोद्भूतस्य बह्वृचः। श्रीमद्गार्ग्य सगोत्रस्य शम्भुभट्टस्य कन्यकाम्।।२९।।
तारां पितुर्गृहे नाम्ना पत्युर्लक्ष्मीवतीति च । जगन्नाथो वरकलो बाबू भट्टापराभिधः।।३०।।
उपयेमेवेदवसुनन्देन्दुमितवैक्रमे। वाराणस्यां मार्गशीर्षे विद्वान् काश्यां महायशाः।।३१।।
ममास्य चोपनयनमेकस्मिन्नेव वासरे। वाराणस्यां समभवद्विन्मण्डल सन्निधौ।।३२।।
अद्रिवाणनवब्रह्मसम्मिते फाल्गुने सिते। वाराणस्यां समुद्भूता पुण्ये वरकलान्वये।।३३।।
तनया ललितानाम या मोरेश्वरशर्मणः। सा दत्ताकाल विण्टाख्य बह्वृचे विष्णुशर्मणे।।३४।।
श्रीमद्द गार्ग्यसगोत्राय मुकुन्द रायसूनवे। महाराष्ट्रब्राह्मणाय काश्यां काशीनिवासिने।।३५।।
सप्तर्तुनन्देन्दुमिते गते वैक्रमवत्सरे। ज्येष्ठशुक्लत्रयोदशयां ललितोपयमोऽभवत्।।३६।।
सपत्नीको जगन्नाथो बाबू भट्टापराभिधः। कनिष्ठभ्रातृसहितो जनन्या सहितश्च यः।।३७।।
वाराणस्यामस्ति महान् विद्वन्मण्डल पुङ्गवः। रत्नभूतः काशिकेषु महाराष्ट्रेषु सद्गुणैः।।३८।।
प्रापानेकानि पत्राणि प्रशंसा सम्भृतान्ययम्। किञ्चिद्ध्रस्वः कृशाङ्गश्च शोभनावयवान्वितः।।३९।।
विद्वल्लोकप्रियो नातिगौरवर्णः प्रभाववान्। सवयाः मम सर्वासु क्रीडासु सहचार्ययम्।।४०।।
अस्य भ्राता कृष्ण नामा श्यामवर्णोऽस्ति साम्प्रतम्। कनीयान् वयसा काश्यां जातोपनयनोर्भकः।।४१।।
यस्य जन्माभवत् काश्यां चन्द्राग्निर्नन्द[१] महीमिते। वैक्रमेब्दे मार्गशीर्ष धनुर्लग्नोदये किल।।४२।।
मरेश्वरः पितृव्यो मे षड्द्विनन्देन्दु सम्मिते। प्रादुर्भूतो मार्गकृष्णाष्टम्यां श्रीनगरे खलु।।४३।।
मातामहावस्य शिशोः प्रेम्णा भैरवभक्तितः। शिशुभैरवनाथेति नामालङ्चक्रतुः पुनः ।।४४।।
त्रयद्रिनन्दब्रह्ममिते गते विक्रमवत्सरे। शुचौ शुक्ले चतुर्थ्यां यो भौमे काश्यां जहावसून्।।४५।।
पत्नीं सुतद्वयं कन्यां हित्वा विधिनियन्त्रितः। सर्वांनविलपतः काश्यां शम्भुसायुज्यमाप्तवान्।।४६।।

१) अत्र मातृकापाठो न स्पष्टः चन्द्राग्नीन्दुमही इति ।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

अयं वंश: काश्यां वरकलसु—नाम्नास्ति विदितो
विदर्भादायातो वसुशतकतोऽप्यादि समये।
समुत्पन्ना यस्मिन्नमलमतिमन्त: कविवरा:।।
समृद्धिं प्राप्नोतु त्रिपुरजयि शम्भो: करूणया।।४७।।

इतिश्री वरकल वंश चरिते काव्ये द्वादश: सर्ग:।।

अथ त्रयोदश: सर्ग:।

काशीस्थ पौराणिक सार्वभौम श्री रामकृष्णस्य विदांवरस्य।
पवित्रमूर्त्तेर्महनीयकीर्तें, विंशत्यपत्यानि समुदगतानि।।१।।
तिस्त्रश्च कन्याश्चतुर: सुताँश्च, विहाय सर्वं तदपत्यजातम्।
बाल्ये शिशुत्वे च यथावकाशं, कालीकपोल: कवलीचकार।।२।।
गङ्गाधरो ज्येष्ठतम: सुतस्तु तत:कनीयान् हि पितामहो न:।
श्री वैद्यनाथो विदुषां वरिष्ठस्तस्यानुजो वामन—नामधेय:।।३।।
तत: कनीयान् रघुनाथनामा, पतञ्जलिप्रोक्त—गिरास्वधीती।
तत्कालयोग्येषु विदांवरेषु, बभूव गण्य: किल काशिकेषु।।४।।
अनेकशास्त्रेषु कुशाग्रबुद्धिर, विभिद्य मर्माणि विदां मन:सु।
काञ्चिच्चमत्कारीं छटां स, खनेत्र वर्षोऽप्यदधाद् वचोभि:।।५।।
जीवत्सु च ज्येष्ठ सहोदरेषु, त्रिष्वाप पञ्चत्वमसौ चतुर्थ:।
आकारितो गोत्रभिदा सभेय:, सुधर्मवेत्रासन भूषणाय।।६।।
स्वर्गाङ्गना सङ्गम योग्य कान्तिर्गुणी गुणज्ञो विदुषां वरिष्ठ।
सुधां समास्वादयितुं सुधाम्नि निमन्त्रिताऽसावकृतोपयाम:।।७।।
स्वां मातरं भ्रातृगणं समस्तं स्वमित्रवर्गं परिवारवन्धून्।
विहाय शोकाकुलमेष धीरो दिवं ययौ शक्र निरीक्षणाय।।८।।
श्रीवामनो नाम विदांवरिष्ठ: श्री रामकृष्णस्य तृतीयसुनू:।
षट्शून्य नन्देन्दुमिते गतेऽब्दे श्री विक्रमार्काज्जनिमाप काश्याम्।।९।।
श्रुतिस्मृति व्याकरणानि काव्यालङ्कार शास्त्राणि पुराणविद्या:।
अधीत्य किञ्चिन्निजताततवक्त्रात्स्वादग्रजाच्चापि बभूव विद्वान्।।१०।।
बहवृङ्—महाराष्ट्रकुलाभिजाताद्वाराणसेयावादविदुषां वरिष्ठात्।
शुक्लेत्युपाख्यात् समधीत्य विद्यामान्वीक्षिकीं तत्र परिनिष्ठितोऽभूत।।११।।
वर्णेन गौरो वपुषा सुदीर्घो राजीवनेत्र: सुविशालभाल: ।
कृशोदर: सून्नतनासिकश्च पुष्टाङ्गगात्रो दिविषत्समोऽभूत्।।१२।।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

अनेकशास्त्रेषु कृतश्रमोऽसौ जन्मान्तरासञ्चित हार्दवश्य:।
तत्काल वैयाकरणाग्रगण्यो बभूव काश्यां स्मृतितत्वदर्शी।।१३।।
स विश्वरूपेत्युपनामधेय, काशी महाराष्ट्र कुलाभिजाताम्।
गृहाय योग्यां परिणीय कन्यां गार्हस्थ्यमायत् कमलाभिधानाम्।।१४।।
अथैकदा तात वियोगदु:खां, विस्मृत्य तिष्ठत्सु सहोदरेषु।
चतुर्ष्वपि प्रेष्ठतम: कनीयान्, यात दिवं श्री रघुनाथनामा।।१५।।
कनिष्ठसोदर्य वियोगदु:खा यावच्छमं नैति हि तावदेव।
तदग्रजन्मा बुधवैद्यनाथ: कालेन कल्याशयनं स नीत:।।१६।।
भ्रातृद्वयी मृत्युज दु:खमेति शमं न यावत् सहसैव तावत्।
दृष्टेर्विनाशोऽभवदस्य दैवात् प्रमाद्यतो वामन पण्डितस्य।।१७।।
विद्यालये काशिक राजकीये विद्यार्थिनोऽध्यापयितुं निदेशम्।
तात्कालिकाद् भारतसार्वभौमात् सम्प्राप्तवान् सादरमेष जातु।।१८।।
सहैव चानेन नियोजितोऽभूत तैलङ्ग गङ्गाधर शास्त्रिवर्य:।
अध्यापकत्वेन समादरेण तत्रैव विद्यालयतल्लजेऽसौ।।१९।।
एतत् प्रतिष्ठापद लब्धिजन्यमानन्दमास्वादयितुं वयस्यै:।
आयोजित: कोऽपि समुत्सवोऽभूद् यत्रार्च्यते सा विजयासपीति:।।२०।।
धत्तूरबीजै: सह ताम्रपात्रे सङ्काश्य भङ्गामदवर्धनाय।
पिष्टा च पीता सकलैस्तदानीमुपस्थितैरूत्सव माननाय।।२१।।
निपीय भङ्गा गरलत्वमाप्ता सर्वेंऽपि ते घोरविपत्तिमीयु:।
कश्चिनमृत: कोऽपि रूजा समेता: षण्मासमासन्निज बुद्धिदोषात्।।२२।।
वयस्य वृन्दस्य महाग्रहेण तां पीतवान् वामन पण्डितोऽपि।
साधारणीयं विजयेति मत्वा परिमाणहीनां निजभाग्यदोषात्।।२३।।
श्वोभूत एव प्रथमे दिनार्धे ज्योतिर्विदादिष्ट मुहूर्त्त आसीत्।
पाठालये पाठनकर्म कर्तुमध्यापक स्थान विभूषणस्य।।२४।।
भङ्गामदावेश विनष्टचेष्टो रात्रौ शयान: खलु मूर्च्छितोऽभूत्।
प्रात: ससंज्ञ: स दृशाविहीनं विदन् स्वमात्मानमभूद् विषण्ण:।।२५।।
ओष्ठावलग्नं चणकं विधाय पटान्तरापत्य समस्तभङ्गाम्।
अलक्षित: स्वैर्निरगाद् गृहाय गङ्गाधरो भाग्यवशान्मनीषी।।२६।।
नैकानि वर्षाणि कृता चिकित्सा व्ययीकृतं भूरिधनं च तत्र।
नैनीस्थ[1] सैन्याङ्ग्ल—चिकित्सकोऽपि[2] न वामनं दृष्टियुतं चकार।।२७।।
अपत्यवानप्यभवत् स पत्न्यां तथापि कालस्तदपत्यजातम्।
सहैव पत्नीं कमलां तदीयां जहार सर्वं भगवत् प्रयुक्त:।।२८।।
सख्यं परं सोदरनिर्विशेषं तैलङ्गगंगाधर शास्त्रिणास्य।

१) नैनीतालस्य: सैन्यचिकित्सक:
२) स इति वामन पण्डित:

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

प्रगाढमत्युटयदद्दष्टपूर्वमाशैशवादामरणं सदासीत् ॥२९॥
वैफल्यमाप्तावनुभूय दृष्टेश्चिकित्सितानां व्यरमद् विरागात्।
सर्वत्र भाग्यं फलतीति मत्वा स्वयं भिषक्तन्त्र सुपण्डितोऽपि॥३०॥
सुतद्वयीं ज्येष्ठसहोदरोऽस्य श्री बैद्यनाथस्य दिवंगतस्य।
निरन्तरं लालनपालनाभ्यां पुष्णन् स कालं गमयाञ्चकार॥३१॥
विद्यागुरूर्ज्येष्ठ सहोदरेऽस्य श्रेष्ठः कवीनां श्रुतिशास्त्रवक्ता।
अत्रान्तरेऽनाथममुं विधाय दिव्यैत् स गङ्गाधर भट्टवर्यः॥३२॥
समीक्ष्य सर्वं भवभोगजातं दुःखैकगेहं क्षणभङ्गुरञ्च।
आनन्दरूपं परमेश्वरं स श्रीवामनः स्वं शरणीचकार॥३३॥

यातै लोकश्रुति नवमही सम्मिते वैक्रमाब्दे
श्रीमांश्चन्द्र श्रुतिमितवयाः पण्डितो वामनोऽपि।
काश्यां विद्वद्वरकलकुलालङ्कृतिः शम्भुभक्तो
ध्यायन्नीशं परमसदनं शम्भुसायुज्यमाप॥३४॥

इति श्रीवरकलवंशचरिते काव्ये त्रयोदशः सर्गः।

अथ वंशवृक्षस्यपरिचयोऽयं भट्ट श्री रामकृष्णस्य।

- भट्ट श्री रामकृष्णः
  - भट्टगङ्गाधरः
  - भट्टवैद्यनाथः
    - भट्टमौरेश्वरः
      - भट्ट जगन्नाथ
      - भट्टकृष्णः
    - भट्टश्रीकृष्णः
      - भट्ट वैद्यनाथः
      - भट्ट रामचन्द्रः
  - भट्टवामनः
  - भट्टरघुनाथः

इति श्री वरकलवंश चरितं काव्यम् समाप्तम्

अथ परिशिष्ट प्रकरणम्
प्रथमो विषयः

यस्मिन् वंशे समुत्पन्ना विद्वन्मुकुट हीरकाः।
श्री नीलकण्ठ श्री राम श्री गोविन्दादयो विदः॥१॥
वाराणसेय विदुषां महामान्या विदांवराः। नैकग्रन्थविनिर्माण सम्प्राप्तातुलकीर्त्तयः॥२॥
तस्मिंश्चिन्तामणि सुतानन्त दैवज्ञ सन्ततौ। विप्रः समभवत् कोऽपि श्री विनायक पण्डितः॥३॥
श्री काशीस्थ महाराष्ट्राऽभिजनो गार्ग्यगोत्रवान्। आश्वलायन् सूत्राढयो ऋग्वेदी वेदवित् सुधीः॥४॥
श्री सखा राम भट्टस्य भट्टवंशदिवामणेः। परिणीय सुतां बालां गार्हस्थ्यं स समागमत्॥५॥
पुत्रत्रये रामनामा तस्यासीन्मध्यमः सुतः। ऋग्वेदिनां काशिकानां प्रवरो वेदपाठिनाम्॥६॥

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

श्री काशीस्थ महाराष्ट्राभिजन ब्राह्मणान्वये। जातस्य दशपुत्राख्यकुलकैरविणी विधोः।।७।।
श्री मदापस्तम्बसूत्राध्यायिनस्तैत्तिरीयिणः। गौतमर्षिसगोत्रस्य रीवानगरवासिनः।।८।।
श्री रामेश्वरपन्तस्य सुतां सोनीति नामिकाम्। परिणीय स गार्हस्थ्यमगमद्द्विदुषां वरः।।९।।
तस्य पुत्रीं सखू नाम्नीं मत् पिता परिणीतवान्। शिवलोक मितायां मेपुजनन्यां काशिकापुरे।।१०।।
तस्याः सापत्नमातुर्मे पञ्चपञ्चाङ्कभू मिते। इष कृष्ण त्रयोदश्यां जन्म रीवापुरेऽभवत्।।११।।
वर्षधान्यमिते वर्षेऽनया सह मत्पिता। विवाहितो जयेष्ठ शुक्ल दशम्यां काशिकापुरे।।१२।।
श्वशुरस्य कुले साध्वी रूक्मिणीत्यभिधावती। सापत्नमाता मम सा सुतमेकमजीजनत्।।१३।।
श्री रामचन्द्र नामायं सोमनाथापराभिधः। वैमात्रेयो मम भ्राता साम्प्रतं वर्तते भुवि।।१४।।
खसप्तनन्देन्दुमिते वर्षे विक्रमतो गते। ज्येष्ठमासे कृष्ण पक्षे षष्ठयामिन्दोर्दिने शुभे।।१५।।
जनिः कर्कोटकेलग्ने श्रवणर्क्षे दिवाभवत्। अस्य श्री रामचन्द्रस्य ख्याते वाराणसीपुरे।।१६।।

अस्य जन्मकुण्डली

(वाराणस्यां दशवादनानन्तरं ४ मिनिट पश्चात्)

विक्र० १९३१ का. कृ. १० दशमी शनिवारे

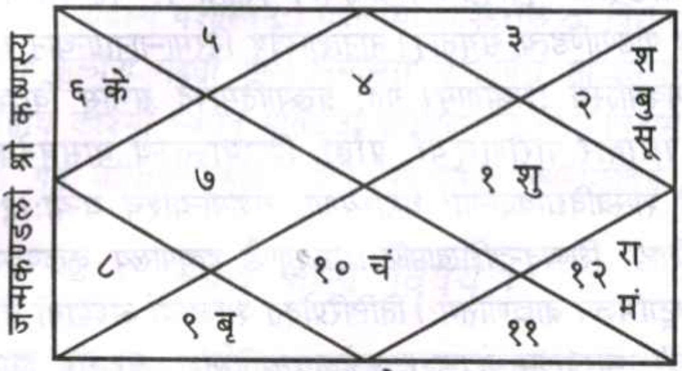

अथ द्वितीयो विषयः

श्री काशीस्थ महाराष्ट्र ब्राह्मणस्य विपश्चितः। ऋग्वेदिनो भट्ट भट्टोपाभिधस्य यशस्विनः।।१।।
विश्वामित्र सगोत्रस्य कस्यचित् पण्डितस्य हि। सुतामुदूह्य गृहितां ययौ मच्छष्टपूरूषः।।२।।
अनन्तरामभट्टाख्यो विद्वान् वरकलान्वयः। रमाख्यया पतिकुले प्रसिद्धा सुमुखीं सतीम्।।३।।
पितामहस्य मम सा विदिता प्रपितामही। अतीवासीद् बलवती शरीरेण यशस्विनी।।४।।
माता गोपाल भट्टस्य हनूमद्भजने रता। श्री राम कृष्ण विदुषो विदितासीत् पितामही।।५।।

अथ तृतीयो विषयः

अत्रिगोत्रसमुद्भूतौ वहवृचावाश्वलायनौ। महाराष्ट्रब्राह्मणानां तारेकुल विभूषणौ।।१।।
वाराणसेय विदुषां महामान्यौ विदां वरौ। मणिराभट्टहरिरामौ सोदरौ सम्बभूवतुः।।२।।
अनेकग्रन्थ निर्माता मणिरामस्तयोरभूत्। तात्कालिक पदाध्यक्ष कोल ब्रुक साहिब पूजितः।।३।।
कनिष्ठो हरिरामस्तु न्यायनिर्णय पण्डितः। राजकीय महान्यायालयाध्यक्षो बभूवह।।४।।
तयोः सहोदरी श्रेष्ठा सर्व सदगुणशालिनी। कमलानामधेयासीन्मत्पितुः प्रपितामही।।५।।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

अथ चतुर्थो विषयः

श्री काशीस्थ महाराष्ट्र ब्राह्मणेषु द्विजोत्तमः। शिवभट्ट इति ख्यातो वेदवित् पङ्क्ति पावनः।।१।।
काश्यपान्वय सम्भूतो धार्मिकः कर्मठः सुधीः। काले उपाह्वः कोऽप्यासीदृग्वेदी चाश्वलायनः।।२।।
तस्य जांया सतीनाम्नी सतीजननुताभवत्। तस्यां स जनयामास तनयं विदुषां वरम्।।३।।
नागेश इति नाम्नातं शिवभट्टः स्वयं पिता। चकार भूषितं देव द्विजगुर्वाग्निसन्निधौ।।४।।
तनयः शिव भट्टस्य सतीगर्भसमुद्भवः। नागोजीभट्ट इति यो वाराणस्यां प्रथामगात्।।५।।
समाराध्य प्राणपणं वागीशीं स्कन्दमातरम्। स लेभे निर्मलां मेधां शास्त्र सारावबोधिनीम्।।६।।
श्री कर्णाट महाराष्ट्राभिजनाद ब्राह्मणोत्तमात्। श्रीमदापस्तम्ब सूत्राध्यायिस्तैत्तिरीयिणः।।७।।
भट्टोजिदीक्षितसुत भानुजीदीक्षितात्मजात्। वाराणसेयाद् व्याकरणं लेभे श्री हरिदीक्षितात्।।८।।
आन्वीक्षिकीं श्री काशीस्थ वङ्गीय द्विजपुङ्गवात्। जगृहे श्रीराम रामभट्टाचार्याद् विदांवरात्।।९।।
वेदवेदाङ्ग मर्मज्ञो धर्मशास्त्र विचक्षणः। पदवाक्यप्रमाणानां मर्मभेत्ता कुशाग्रधीः।।१०।।
षड्दर्शनी विवरणाचार्यः कर्मठपुङ्गवः। गृहीत क्षेत्रसन्यासः पुण्यश्लोक शिखामणिः।।११।।
सिद्धेश्वरी सन्निधाने वाराणस्यामयं वसन्। अध्यापयन् बहूँश्छात्रान् ऋषिकल्पः प्रभाववान्।।१२।।
पणिनीयव्याकरणव्याख्याता बुधपुङ्गवः। बभूवानन्यसामान्यः पतञ्जलिरिवापरः।।१३।।
सोऽनुग्रहाय छात्राणां प्रौढपाण्डित्य संयुतान्। नानाशास्त्रेषु निरमान्नानाग्रन्थान् मनोरमान्।।१४।।
श्रृङ्गवेरपुराधीशो रामवर्माऽस्य शिष्यताम्। गतः प्रख्यातिमापेदे सभासु विदुषां पराम्।।१५।।

विद्या पारावार पारीणधुर्याः प्रौढाः शिष्यास्तस्य चासन्ननेके।
देशे देशे शास्त्रविद्यावदान्याः धर्माध्यक्षाः राजमान्याश्च धन्याः।।१६।।

तस्यासीत् प्रमुखः शिष्यः शिष्यवृन्दाशिखामणिः। पायगुण्डे इत्युपाख्य कुलपद्मप्रभाकरः।।१७।।
श्री काशीस्थ महाराष्ट्राभिजन ब्राह्मणोत्तमः। तित्तिरिप्रोक्त शाखाया अध्यायी वेदवित्तमः।।१८।।
आपस्तम्ब कल्पसूत्री भारद्वाजसगोत्रजः। अनेकग्रन्थनिर्माण धुरन्धर शिरोमणिः।।१९।।
तदानीन्तन काशीस्थ विदुषामग्रणीः सुधीः। पदवाक्यप्रमणानां पारदृश्वा महामतिः।।२०।।
पायगुण्डे भट्ट वैद्यनाथ इत्याख्यया वराम्। प्रसिद्धिमागतः काश्यां सदा शिष्यगणावृतः।।२१।।
तत्तच्छास्त्रं–ग्रन्थि–गूढ–मर्म–भेदन पेशलान्। नानाग्रन्थान् विधायायं सच्छात्रान् समुपाकरोत्।।२२।।
अर्चितोऽनेन विधिना भगवान् भैरवो वटुः। सरस्वत्या श्रिया चैनं[१] सम्पन्नं समपादयत्।।२३।।
आसीदस्यैव शिष्यस्तु काश्यपान्वय सम्भवः। देवोपाख्यमन्युशर्मा वैयाकरण पुङ्गवः।।२४।।
श्री काशीस्थो महाराष्ट्रो बाह्वृचो ऋग्वेदी चाश्वलायनः। अनेकाशास्त्रनिपुणो ग्रन्थनिर्माण पण्डितः।।२५।।
दुहितुर्दुहिताचास्य दुर्गा बाईति विश्रुता। गाभे सदाशिवसुता ममासीत् प्रपितामही।।२६।।
दुर्गा पितुगृहे लोके मैया बाहिति विश्रुता। लक्ष्मी बाई पतिगृहे ममसा प्रपितामही।।२७।।
वैक्रमेऽव्दे गते काश्यां वसुवेदाङ्कभूमिते। प्रापासौ शम्भुसायुज्यं वृद्धां नेत्राद्रिवर्षका।।२८।।
मौरेश्वर श्री कृष्णाभ्यां पौत्राभ्यां सुयथाविधि। सम्पादितं सुयोग्याभ्यां सर्वमप्यौर्ध्वदैहिकम्।।२९।।

यस्याः कोऽप्यधिपः पिता समभवत् सेनापतिर्बुद्धिमान्,
नानाग्रन्थविधानविस्तृतयशा मातामहः पण्डितः।

१) संदिग्ध इवात्र पाठो मातृकायाम्।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

काशीस्थाखिल विद्वदर्चितपदः पाणिग्रहीता पतिः,
सा काश्यां प्रपितामही वरकला याता पदं शाम्भवम्।।३०।।
लावण्ये प्रथितं बलेन महता दीप्तां बहन्ती वपु
स.........१.........सभोज्यवस्तुनि च या..२.....रेऽप्रतिद्वन्द्विनी।
दाने मुक्ताशया सतीषुमहिता दीने दयार्द्राशया
काश्यां मत्प्रपितामही शिवमिता शम्भोः प्रसादात् पदम्।।३१।।

(१+२) उभयत्र पाठः संशयितः मातृकायाम्।

अथ पञ्चमो विषयः

भारद्वाज सगोत्राणामाश्वलायनसूत्रिणाम्। ऋग्वेदिनां महाराष्ट्राभिजनानां द्विजन्मनाम्।।१।।
श्रोत्रियाणां सदाचार निष्ठानां ब्रह्मवादिनाम्। कुले 'ओदक' इत्याख्येऽनेक राज्य सुपूजिते।।२।।
वसुधा कान्तिमत खण्डे श्रेष्ठे मालव मण्डले। विप्रः समभवत् कोऽपि श्रीदामोदर पण्डितः।।३।।
नृपा बुन्देल खण्डस्था यत्साहाय्यं निरन्तरम्। स्वराज्य कार्य भारेषु वाञ्छन्तिस्म सगौरवम्।।४।।
तस्य पुत्री चिमानाम्नी रामबाईति विश्रुता। श्वशुरस्य कुले यासीत् साध्वी सद्गुण पण्डिता।।५।।
अनेक ग्रन्थ निर्माण पण्डितस्य यशस्विनः। भागिनेयी पौण्डिरीक श्री विद्यापति शास्त्रिणः।।६।।
आर्जवादिगुणैर्युक्ता कुलीना महती मम। निर्मत्सरा च निर्वैरा साऽऽसीदार्या पितामही।।७।।
विहाय काश्यां स्वतनूं पतिव्रता पतिव्रतालोकमिता पितामही।
वर्षे गत वस्तिषुनन्दभूमिते देवी समायुष्मति कातिथाविषे।।८।।

अथ षष्ठो विषयः।

विश्वामित्रान्ववायीय श्री धनञ्जयगोत्रजः। आश्वलायन शाखीयो ऋग्वेदी पण्डिताग्रणी।।१।।
श्री काशीस्थो महाराष्ट्राभिजनो ब्राह्मणोत्तमः। आसीच्छङ्कर भट्टाख्यो विद्वांन् स उपनामकः।।२।।
भारतीय सार्वभौम दिल्ली पद विराजितात्। तात् कालिक महाराजाधिराज पदवी श्रितात्।।३।।
शाह आलमतस्तुष्टाद् भूमिं तद्गोप्तृतां च यः। सर्वाधिकारसम्पन्नां लेभे कान्हपुरान्तिके।।४।।
तस्य वंशे समुत्पन्नः श्रीवेणी राम पण्डितः। मम मातामहस्त्वासीत् काशी वासि द्विजाग्रणीः।।५।।
आग्ल शासनसंग्रामे वेदचन्द्राङ्कभूमिते। अस्य सर्वापि सम्पत्तिर्नष्टा चापहताप्यभूत्।।६।।
तदारभ्य प्रयागेऽयं सकुटुम्बः समागतः। चक्रे निवासं तद्वशस्त्रत्रैवास्ते हि साम्प्रतम्।।७।।
घोण्डूबाईति विख्याता गोपिकानामिकाचया। सुता गोपालपन्तस्य मम मातामही खलु।।८।।
श्री काशीस्थ महाराष्ट्र विद्वद्–ब्राह्मणपूजिते। भारतीयैर्महाराजैः सत्कृते भूरिवैभवे।।९।।
अनेकग्रन्थनिर्माण प्रोच्छ्रायित यशोध्वजे। धर्माधिकारीति महाप्रतिष्ठित पदाश्रये।।१०।।

देवीसमा अष्टचत्वारिशद् वर्ष वयस्केत्यर्य
आयुष्मतिकातिथौ कृष्ण चतुर्दशामित्यथः
मातृका टिप्पण्यां लिखितम् तत्र दे–८, बी–४–४८ इति

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

श्रीममुद्गलगोत्रीय वंशे समभवत् पुमान्। आश्वलायनशाखीय बह्वृग ब्राह्मण मण्डितेः।।११।।
यस्य पुत्राष्टकं विद्वच्चैकासीद्विदुषी सुता। मातामहः स मातुर्मे श्रीमान् गोपाल पण्डितः।।१२।।

भूवेदनन्देन्दु मिते गतेब्दे पौषे सिते कामतिथौ प्रयागे।
दशाश्वमेधेश्वर सन्निधाने सिंहोदये प्रादुरभून्ममाम्बा।।१३।।
तांकन्यकां वीक्ष्य शुभां तदम्बा तद्भ्रातरस्तत् प्रियमातुलाश्च।
सौन्दर्य लावण्यवतीं विशिषाच्चक्रुर्हि नाम्ना खलु पुत्तलीति।।१४।।
पतिव्रता सत्यपरायणा सा राधाभिधाना श्वशुरस्य गोत्रे।
गम्भीर भावाऽपि च सत्यरोषा नानाकला कौशल पण्डितासीत्।।१५।।
गुणर्तुनन्देन्दुमितेगतेऽब्देकृष्णेदले श्रावणिके नवम्याम्।
विहाय मामेकसुतं पृथिव्यां पतिव्रतालोकमियाय काश्याम्।।१६।।

ग्रन्थ निर्मातुर्जन्म कुण्डली

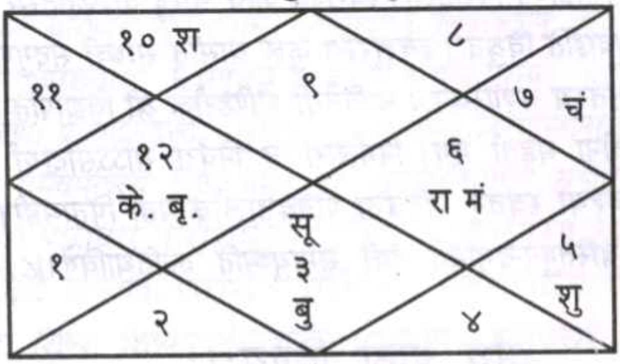

वि० सं० १९६० आषाढ शुक्लपक्ष नवम्याम्
शुक्रवारे चित्रानक्षत्रे चतुर्थ चरणे
धनुर्लग्ने इष्टकालः ३३ घ. ३ प.

नवांश कुण्डली

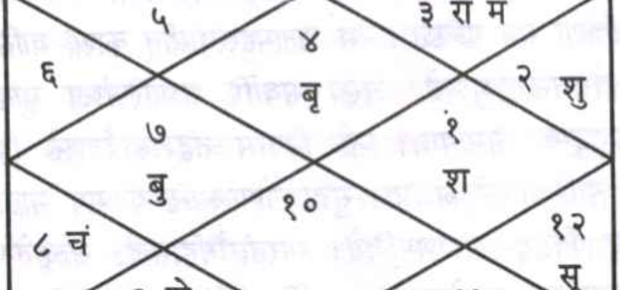

समाप्त परिशिष्ट प्रकरणम्

समाप्तोऽयं ग्रन्थः।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri